आकाशगंगा

वर्ष : 2 | अंक : द्वितीय

अवधि : अक्टूबर, 2025 - मार्च, 2026

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
प्रयागराज (उपक्रम)

अध्यक्षता :

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

नगर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

अध्यक्षता : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,

नगर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज

आकाशगंगा

अंक : 2 | अवधि : अक्टूबर, 2025 – मार्च, 2026

संरक्षक
श्री वेंकटेश्वर एल.
कार्यपालक निदेशक / प्रधानाचार्य,
एवं अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

मार्गदर्शन
श्री विकास मिश्रा
संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक
श्री ओम प्रकाश खरवार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एवं सदस्य सचिव, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

सह-संपादक
श्री प्रमथेश शर्मा
वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)

"आकाशगंगा" पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने निजी विचार हैं। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सहमति एवं रचनाओं की मौलिकता हेतु नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) का सहमत अथवा उत्तरदायी होना आवश्यक नहीं हैं।

आकाशगंगा

अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) महोदय का संदेश

संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) महोदय का संदेश

उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का संदेश

संपादकीय – सदस्य संचिव, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
1	हिन्दी के विकास में दक्षिण भारत का योगदान	1-3
2	स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका एवं वर्तमान में राजभाषा के रूप में उपयोगिता	4-6
3	आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है।	7-8
4	हिन्दी व्याकरण लेख – आचार्य पंडित पृथ्वीनाथ पाण्डेय की पाठशाला	9-18
5	हिन्दी भाषा की विकास यात्रा एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता	19-21
6	मां गंगा: भारत की संस्कृति, आस्था और अस्तित्व की अमरधारा	22-24
7	कविता : वो जो खुद को गढ़ती है	25
8	कविता : माँ	26
9	कविता : माँ	27
10	राजभाषा नियम, 1976 को सरल शब्दों में समझिए	28-31
11	स्वास्थ्य : योगासन से वजन घटाएँ और स्वस्थ रहें	32-35
12	पुस्तक समीक्षा : मार्जिनलैंड्स-कगार पर भारतीय परिदृश्य	36-42
13	देश की एकता में पावरग्रिड का योगदान	43-44
14	प्रेरक व्यक्तित्व : डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम	45-47
15	प्रतिनिधि रचना - बाल कविता : जागो प्यारे	48
16	प्रतिनिधि रचना - बाल कविता : चाँद का कुर्ता	49
17	कार्यालय में प्रयोग होने वाले प्रचलित प्रशासनिक शब्द	50-52
18	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (उपक्रम) की वर्ष 2025-26 की उपलब्धियां	53-68
19	सीएटीसी प्रयागराज की वायु यातायात प्रबंधन प्रशिक्षण संबंधी उपलब्धियां	69-75
20	भारत में जल संसाधनों की वर्तमान स्थिति	76-77
21	हिन्दी के कुछ प्रचलित मुहावरे	78
22	हिन्दी में प्रयोग होने वाले कुछ प्रचलित विदेशी शब्द	79
23	उर्दू ग़ज़ल - जिधर जाते हैं सब, जाना उधर अच्छा नहीं लगता	80
24	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों का विवरण	81-82

हमारा देश

सुखद, मनोरम, सबसे प्यारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।

नई सुबह ले सूरज आता,
धरती पर सोना बरसाता,
खग-कुल गीत खुशी के गाता,
बहती सुख की अविरल धारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।

बहती है पुरवाई प्यारी,
खिल जाती फूलों की क्यारी,
तितली बनती राजदुलारी,
भ्रमर सिखाते भाईचारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।

हिम के शिखर चमकते रहते,
नदियाँ बहतीं, झरने बहते,
'चलते रहो' सभी से कहते,
सबकी ही आँखों का तारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।

इसकी प्यारी छटा अपरिमित,
नये नये सपने सजते नित,
सब मिलकर चाहें सबका हित,
यह खुशियों का आँगन सारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

श्री वेंकटेश्वर एल
Shri Venkateshwar L
कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य,
Executive Director/Principal

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
Airports Authority of India
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज
Civil Aviation Training College, Prayagraj

एवं/And

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

Chairman, Town Official Language Committee, Prayagraj (Undertaking)

अध्यक्ष महोदय का संदेश

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
ISO9001:2015 CERTIFIED

संदेश

यह बड़े ही गर्व की बात है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज के पास है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण संघ की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार हेतु पूर्णरूप से प्रतिबद्ध है और इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) की ई-पत्रिका **"आकाशगंगा"** के **द्वितीय अंक** का प्रकाशन इस कार्यालय द्वारा किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूरी उम्मीद है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगा। **"आकाशगंगा"** पत्रिका के **द्वितीय अंक** के प्रकाशन के अवसर पर मैं इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग को हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ देता हूँ जिनके अथक परिश्रम से इस शानदार, रोचक एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका।

(श्री वेंकटेश्वर एल.)
कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य एवं
अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज
बमरौली, प्रयागराज -211012
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
BAMRAULI, PRAYAGRAJ-211012
ई-मेल/E-mail: edcatc@aai.aero
दूरभाष/ Phone: 0532-2580435
फैक्स/ FAX: 0532-2580441

श्री विकास मिश्रा

Shri Vikas Mishra

संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

Joint General Manager (HR)

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

Airports Authority of India

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

Civil Aviation Training College, Prayagraj

संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
ISO9001:2015 CERTIFIED

संदेश

हिन्दी हमारे देश की महज राजभाषा ही नहीं है बल्कि इस देश अधिकांश नागरिकों के आम बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा भी है। भारतीय संविधान में राजभाषा हिन्दी का व्यापक वर्णन है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। हिन्दी एक सहज, सरल और मीठी भाषा है और इसे सीखना बहुत ही आसान है।

इस कार्यालय के पास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता वर्ष 2019 से है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) धीरे-धीरे अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति अपनी प्रतिबद्धिता को नया आयाम देते हुए इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) हेतु प्रकाशित की जा रही **ई-पत्रिका "आकाशगंगा" के द्वितीय अंक** के सफल प्रकाशन हेतु मैं दिल से कामना करता हूँ।

एक पत्रिका का प्रकाशन करना बड़ा ही कठिन काम है तथा इसमें लगातार मेहनत और एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के समर्पण एवं मेहनत को मैं साधुवाद देता हूँ जिनके प्रयासों के कारण इस ज्ञानवर्धक ई-पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है।

(श्री विकास मिश्रा)
संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज
बमरौली, प्रयागराज -211012
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
BAMRAULI, PRAYAGRAJ-211012
ई-मेल/E-mail: edcatc@aai.aero
दूरभाष/ Phone: 0532-2580435
फैक्स/ FAX: 0532-2580441

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र -2), गाज़ियाबाद

REGIONAL INPLEMENTATION OFFICE (NORTHERN REGION-II), GHAZIABAD

उप निदेशक (कार्यान्वयन) महोदय का संदेश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार / GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग /MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र -2) / REGIONAL IMPLEMENTATION OFFICE (NORTHERN REGION-II)
302, सी.जी.ओ. भवन -1, कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद-201002 (उ.प्र.)
302, C.G.O BUILDING-1, KAMLA NEHRU NAGAR, GHAZIABAD -201002 (U.P.)
दूरभाष / TELEPHONE 0120-2719356 ई-मेल/ E-MAIL ddriogzb-dol@nic.in एवं rionorthgzb@gmail.com

फा.सं.-क्षे.का.का.उ./पत्रिका-संदेश/181 दिनांक – 08/05/2026

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निरंतर सराहनीय प्रयास कर रही है । इसी क्रम में नराकास प्रयागराज (उपक्रम) अपनी ई-पत्रिका “आकाशगंगा” के द्वितीय अंक का प्रकाशन करने जा रही है । मुझे विश्वास है कि “आकाशगंगा” का यह अंक भी संग्रहणीय होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा । पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

(छबिल कुमार मेहेर)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA

संपादक की कलम से

भाषा संचार का सबसे सुंदर और सशक्त माध्यम है और यदि बातचीत हिन्दी भाषा में हो तो यह विचारों के अभिव्यक्ति में चार चाँद लगा देता है। हिन्दी आत्मीयता की भाषा है। यह भारत की जन भाषा है। इस जन भाषा को हमें राजभाषा के जरिये राष्ट्रभाषा तक पहुंचाना है। हिन्दी भारत के अधिकांश भागों में बोली, पढ़ी, लिखी और समझे जाने वाली भाषा है। यह मनोरंजन जगत, सिनेमा, गीत-संगीत एवं विज्ञापन की सबसे प्रचलित भाषा है। यह सोशल मीडिया पर सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली भाषा है। वर्तमान स्थिति यह है कि हिन्दी का सभी जगहों पर सबसे अधिक प्रयोग होने के बावजूद भी यह सरकारी कार्यालयों में कामकाज की सबसे लोकप्रिय भाषा अब तक नहीं बन सकी है। यहाँ किसी अन्य भाषा से विरोध की बात भी नहीं है। यहाँ सवाल सिर्फ इतना है कि आजादी के लगभग 77 वर्षों के बाद भी हम अपने स्वदेशी भाषा में पूर्णतः कामकाज करने में अभी तक सफल नहीं हो पाए हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) अपने स्तर पर काफी प्रयासरत है कि अपने सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी में कामकाज के कल्चर को बढ़ाए जाने के लिए पूरी तरह से प्रयसरत है ताकि अधिक से अधिक कार्यालय हिन्दी में कामकाज कर भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें। वित्त-वर्ष 2025-26 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) ने सदस्य कार्यालयों के लिए 4 हिन्दी कार्यशालाएँ, 01 राजभाषा संगोष्ठी एवं 9 राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) के प्रयासों को नराकास बैठकों में सदस्य कार्यालयों द्वारा काफी सराहा भी गया गया है तथा उन्होंने यह स्वीकार किया है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) के प्रयासों से उनके कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज करने की प्रवृति धीरे-धीरे बढ़ रही है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों के आपसी सहयोग एवं समन्वय का ही परिणाम रहा है की उपक्रमों के इस समिति को गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हिन्दी दिवस, 2025 के समारोह के दौरान राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन हेतु **प्रशंसनीय श्रेणी में** पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

ओमप्रकाश

श्री ओम प्रकाश खरवार,
सहायक प्रबंधक (राजभाषा),
एवं सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

लेख

श्री सत्यन कुमार,
उप महाप्रबंधक (एटीएम),
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

"हिन्दी के विकास में दक्षिण भारत का योगदान"

हिन्दी जो संप्रति राजभाषा के रूप में मान्य है, देश की अघोषित राष्ट्रभाषा है और पूरब से पश्चिम को एवं उत्तर को दक्षिण से जोड़ने वाली संपर्क भाषा के रूप में विख्यात है। भाषा अभिव्यंजना और सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। भारत में जितनी भाषाएँ बोली जाती हैं , उनके बारे में एक लोकोक्ति प्रचलित है – **' कोस कोस पर बदले पानी, तीन कोस पर बानी ' ।**

स्वाभाविक रूप से भारत भाषायी विविधतों से पूर्ण राष्ट्र है और यहाँ किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा की उपाधि देने का कार्य अब तक अपूर्ण रहा है। सर्वाधिक जनों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी की राष्ट्रभाषा के रूप में देखे जाने का स्वप्न स्वतन्त्रता-संग्राम के दौरान कई मनीषियों, राजनेताओं और मूर्धन्य विद्वानों ने देखा था और निस्संदेह वे किसी विशेष प्रांत यथा- उत्तर अथवा पश्चिम से न होकर भारत के सभी प्रान्तों से थे और इनमें से किसी का भी योगदान कमतर करके नहीं आँका जा सकता है।

जब भी हिन्दी के विकास में दक्षिण भारत के योगदान की चर्चा की जाती है तो प्राय: प्रबुद्ध जन हिन्दी विरोधी आंदोलनों की दुहाई देकर भारत के कई ख्यातिलब्ध मनीषियों, निष्णात विद्वानों और मनस्वी सर्जकों के अमूल्य एवं अनुपम योगदानों को गलत ठहराने की कोशिश की जाती है । यह नितांत भ्रांत अवधारणा है और इससे उनके अपूर्ण अध्ययन एवं तथ्यों की अनदेखी की अवधारणा भी पुष्ट होती है। निम्नलिखित बिन्दुवार तथ्य हिन्दी के विकास में दक्षिण भारत के सार्थक योगदान को रेखांकित करते हैं :-

1. प्रारम्भ में भारत की संपर्क भाषा संस्कृत थी एवं बौद्ध तथा जैन धर्म के आगमन के पश्चात दक्षिण में पालि एवं अपभ्रंश भाषाओं का प्रचार-प्रसार शुरू हुआ । अपभ्रंश को हिन्दी का पुरातन स्वरूप माना जाता है और स्वयंभू ने दक्षिण में रामायण की रचना अपभ्रंश में की थी। तत्पश्चात, पुष्पदंत ने भी महापुरन की रचना इसी भाषा में की ।
2. केरलम के प्रसिद्ध कवि स्वाति तिरुनाल जी द्वारा श्रीमदभागवत पुराण में वर्णित श्री कृष्ण-लीला माधुरी से सम्बद्ध और अनुप्रास अलंकार से सुशोभित दो कविताओं की प्रथम पंक्तियों : -
   (क)मैं ओ नहीं जाऊन, जननी जमुना के तीर

(ख) करुणानिधान कुंज के बिहारी, तुम्हारी बातें लाला मनोहारी को देखकर कोई भी दक्षिण भारत में हिन्दी के विकास का अनुमान लगा सकता है। सनद रहे कि ये पंक्तियाँ उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही लिखी गयी थीं।

3. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में दक्षिण भारतीय श्री रामानन्द की शिष्य परंपरा में आने वाले तुलसी, मीरा, सूर, रसखान आदि की कविताओं ने ही हिन्दी को एक उत्कृष्ट निकष दिया। आगे, पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक के श्री वल्लभाचार्य जिनकी मातृभाषा तेलुगू थी, उनके शिष्य सूरदास ने ही सूरसागर की रचना की। रीतिकालीन कवि श्री पद्याकर भट्ट जी की ख्याति किससे प्रच्छन्न रही है, जो आंध्र प्रदेश के थे। शालिवाहन राजा के गाथा सप्तशती के आधार पर ही बिहारी जी की "सतसई" रचित मानी जाती है। हिन्दी के राष्ट्रीय रूप खड़ी बोली का मूल प्रारूप 'दक्खिनी हिन्दी' अथवा दक्षिणी हिन्दी को ही माना जाता रहा है।
4. स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान तो राष्ट्र और हिन्दी एक-दूसरे के पूरक बन गए थे और उस समय भाषायी सर्वोच्चता के लिए किसी प्रकार का मतभेद नहीं था। दक्षिण के कई राजनेता, विद्वान एवं मनीषी आदि उत्तर भारत से हिन्दी सीखकर गए और उन्होने अपने प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। महात्मा गांधी ने सन 1918 के इंदौर के हिन्दी सम्मेलन में कहा था कि एकमात्र हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती हैं। उन्होंने सन 1918 में ही हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने के लिए "दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति" की स्थापना मद्रास में की थी और उनके पुत्र देवदार गांधी इस समिति के प्रथम कार्यकर्ता चुने गए। सन 1922 में मोटूरि सत्यनारायण जिन्होंने आंध्रप्रदेश के नैल्लोर में इसकी शाखा स्थापित की। अब तक इस समिति की कई शाखाएँ-उप शाखाएँ दक्षिण भारत में पूर्णरुपेण कार्य करने लगी थीं। सन 1932 में केरलम में इसकी शाखा खुली एवं कर्नाटक में सन 1935 में इसकी शाखाएँ खुली। उस समय सी. पी. रामासामी अय्यर, टीआरवी शास्त्री एवं सुंदरम अय्यर ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अपना अथक योगदान दिया। इसके पूर्व ही लाखों लोग वहाँ हिन्दी में लेखन एवं पठन-पाठन करने लगे थे।
5. महात्मा गांधी के करीबी सहयोगी मोटूरि सत्यनारायण ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सर्वाधिक योगदान दिया। दक्षिण भारत में उनके इस योगदान को कदापि विस्मृत नहीं किया जा सकता। उन्होंने हिन्दी विभाग के कई पदों को सुशोभित किया और हिन्दी विश्वकोश के दस भागों की रचना भी की।
6. दक्षिण भारत के विभिन्न पुरोधा विद्वानों ने हिन्दी की समृद्धि के लिए अनुपम योगदान दिया। उनके इन प्रयासों अथवा कृतियों को तीन भागों में बांटा जा सकता है :-

   (क) मौलिक सृजन

   (ख) शोध एवं आलोचना

   (ग) अनुवाद

उन मनस्वियों ने न सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक सृजन किया वरन उन्होंने हिन्दी के कई श्रेष्ठ ग्रन्थों को दक्षिणी भाषा में अनूदित कर दक्षिण के लोगों अथवा द्रविड़ भाषी (तेलुगू, तमिल, मलयालम एवं कन्नड) लोगों को

हिन्दी की श्रेष्ठतम कृतियों से परिचय करवाया। इसके अलावा उन्होंने दक्षिण के श्रेष्ठ साहित्य एवं शोधपरक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद कर भारत के सभी राज्यों के मध्य सुदृढ़ भाषायी सेतु का विनिर्माण भी किया।

7. प्रेमचंद की सभी कहानियों एवं उपन्यासों का इसी क्रम में तमिल में अनुवाद हुआ और सुब्रह्मण्यम भारती जी की कृतियों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। यह विस्मय की बात लग सकती है कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव जी ने सत्यनारायन जी की कृति ‘ वेई पुनगल ’ को हिन्दी में सहस्त्रफण के रूप में अनुवाद किया था।
8. आज एण्ड्रोएड पर कई एप्प यथा – अमरकोश, वाचस्यवयं , शब्द कल्पद्रुप आदि उपलब्ध हैं जिनके विकास में कई दक्षिण भारतीयों ने अपना स्तुव्य योगदान दिया।
9. लोटा, कुक्कुर आदि शब्द हिन्दी भाषा को दक्षिण भारतीय भाषाओं की ही देन हैं।
10. विविध राजकीय अथवा कार्यालयीन कार्यों में दक्षिण भारतीयों का हिन्दी भाषा का प्रयोग भी उनके अमूल्य योगदान को रेखांकित करता है।
11. ‘तरुक्कुरल’ (संत थिरुवल्लूर रचित) जैसे ग्रन्थों का हिन्दी में उपलब्धता एवं कामायनी, आँसू (जय शंकर प्रसाद कृत), पल्लव, चिरवंश (पंत कृत) आदि के विविध दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवाद इस सहज विनिमय को सतत रेखांकित करते हैं।
12. दक्षिण भारत से आज भी कई पत्र-पत्रिकाओं यथा – कल्पना , श्री मिलिंद, दक्षिण भारत, भारत वाणी आदि का प्रकाशन भी उनके हिन्दी भाषा की संवृद्धि और समृद्धि हेतु सतत प्रयास को हमारे समक्ष प्रदर्शित करता है।

उपसंहार

समापन स्वरूप, हिन्दी भाषा विविध द्रविड़ अथवा दक्षिण भारतीय भाषाओं के साथ सतत विनिमय से परिष्कृत एवं परिवर्धित हुई है और इस विकास में दक्षिण भारत के मूर्धन्य एवं निष्णात विद्वानों, लेखकों, मनीषियों एवं राजनेताओं का भी सतत, सार्थक एवं स्तुव्य योगदान रहा है।

पहाड़ों की कंदराओं में बैठकर तप कर लेना सरल है, लेकिन परिवार में रहकर धीरज बनाए रखना सबके वश की बात नहीं।

मुंशी प्रेमचंद

लेख

श्री अरेन्द्र मौर्य,
प्रबंधक (एटीएम)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज , बमरौली, प्रयागराज

स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका एवं वर्तमान में राजभाषा के रूप में उपयोगिता

प्रस्तावना

“निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटे न हिय को शूल॥”

भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित पंक्तियाँ स्वभाषा की महत्ता का सुन्दरतापूर्वक वर्णन करती हैं। भाषा न केवल पारस्परिक संवाद का माध्यम है, वरन् यह जन-समूहों को एक कड़ी में पिरोने का कार्य भी करता है।

भारतवर्ष के सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की उपस्थिति के बावजूद भी हिन्दी एक ऐसा माध्यम है जिससे उत्तर से लेकर दक्षिण तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक की भाषायी सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं।

हिन्दी भाषा के माध्यम से संवाद स्थापित करना न केवल परस्पर भावनाओं का आदान-प्रदान करना सुगम बनाता है बल्कि एक-दूसरे के रिवाजों और मान्यताओं को भी समझने में मदद करता है। परन्तु हिन्दी को राष्ट्रीय एवं वैश्विक पटल पर लाना इतना सरल कार्य नहीं रहा।

स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि तथा भाषा का महत्व

सन 1857 की क्रांति से लेकर सन 1947 के स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक भारतवर्ष ने विभिन्न प्रकार की असमानताओं का सामना किया। उदाहरण स्वरूप शिक्षित वर्ग द्वारा अशिक्षित एवं गरीब जन का शोषण

किया जाना, काले एवं गोरे वर्ण पर भेद किया जाना, छुआछूत की कुरीतियों का पालन किया जाना इत्यादि। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के सुविचार प्रचलन में थे तथा संवाद की अनुपस्थिति के कारण जनसमूहों को एकत्र करना मुश्किल हो जाता था।

ऐसे में तत्कालीन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जैसे बाल गंगाधर तिलक, राजेन्द्र प्रसाद, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी इत्यादि ने हिन्दी की महत्ता को पहचाना तथा हिन्दी को सामान्य बोलचाल एवं पत्र-व्यवहार हेतु अंगीकृत किया। स्वतंत्रता सेनानियों ने जन-जागरण हेतु विभिन्न पत्रिकाओं तथा अखबारों का प्रकाशन हिन्दी में प्रारम्भ कर दिया।

"प्रताप", "कर्मवीर", "अभ्युदय", "आज" जैसी पत्रिकाओं ने जनसमूहों में क्रांति ला दी। महात्मा गांधी ने स्वयं गुजराती होते हुए भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव दिया। महात्मा गांधी के शब्दों में:-

"कोई भी देश अपनी भाषा को त्यागकर आत्मनिर्भर नहीं कर सकता।"

स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका

हिन्दी साहित्य ने भी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जन समूह को प्रेरित करने में महती भूमिका निभाई। हिन्दी साहित्य के मशहूर लेखक एवं कवियों ने अपने निबंधों एवं कविताओं के माध्यम से सभी में देशप्रेम की भावना जागृति का कार्य किया।

रामधारी सिंह दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान ने परिष्कृत एवं सुसंस्कृत कर्तव्यों से प्रेरित रचनाएँ कीं। सुभद्रा कुमारी चौहान की "झाँसी की रानी" रचना ने जनमानस में जगह बनाई तथा आंदोलन हेतु एक प्रेरक के रूप में कार्य किया।

हिन्दी कवियों ने वीर-रस से ओत-प्रोत कविताओं की रचना की तथा संकलन प्रकाशित किए जिससे जन-भावनाओं को उद्वेलित करने में सहायता मिली। हिन्दी साहित्य ने स्वदेश और स्वराज्य के नारे को और बुलंद किया।

"भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के लेखकों एवं कवियों को भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

हिन्दी का राजभाषा के रूप में चयन

वर्ष 1947 में स्वतंत्र प्राप्ति के पश्चात् सबसे बड़ी चुनौती थी - भाषाई व्यवस्था के बीच प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखना। गहन मनन-चिंतन के बाद संविधान निर्माताओं ने हिन्दी की देवनागरी लिपि को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दे दिया।

संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक के प्रावधान राजभाषा हिन्दी के उपयोग हेतु वर्णित हैं। हिन्दी को राजभाषा के रूप में सम्मिलित करना अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को कमतर नहीं आंकना है, वरन् यह क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य समन्वय स्थापित करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है।

वर्ष 1975 में विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार की बात को सुदृढ़तापूर्वक रखा गया। वर्तमान समय में सभी कार्यालयों को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है तथा द्विभाषी पत्र-व्यवहार के लिए आग्रह किया जाता है।

आज के तकनीक के युग में मीडिया, समाचार भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल मंचों पर विभिन्न कार्यक्रम तथा ज्ञानवर्धक सामग्री हिन्दी में उपलब्ध रहती है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में :-

“हिन्दी भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है।”

चुनौतियाँ

हिन्दी के व्यापक उपयोग तथा भारत सरकार द्वारा इसका प्रोत्साहन किए जाने के बाद भी इसके प्रसार में अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। उदाहरण स्वरूप तकनीकी क्षेत्र में शब्दावली का अभाव, अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव तथा बहुभाषी क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करना।

वर्तमान समय में वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में शब्दावली का अभाव होने की दशा में हिन्दी में अनुसंधान करना कठिन प्रतीत होता है।

डिजिटल क्रांति के आने के पश्चात् एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होने के कारण आज का युवा अंग्रेजी की तरफ ज्यादा आकर्षित हो रहा है। इस दिशा में भारत सरकार को कार्य करने की परम आवश्यकता है जिससे युवाओं में हिन्दी के प्रति प्रेम जगाया जा सके।

भारतवर्ष में क्षेत्रीय भाषाओं की उपस्थिति भी हिन्दी के प्रसार को चुनौतीपूर्ण बनाती है। राज्य सरकारें इस सम्बन्ध में अपने कार्यालयों को हिन्दी में कार्य करने हेतु निर्देशित कर सकती हैं।

उपसंहार

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जन जागरण, राष्ट्रीय एकता एवं स्वदेश प्रेम की भावना को सशक्त रूप प्रदान किया है।

स्वतंत्रता के बाद राजभाषा के रूप में हिन्दी ने लोकतांत्रिक शासन को जनता के निकट लाने का कार्य किया है। आज के युग में हिन्दी प्रशासन, शिक्षा, मीडिया और तकनीक के क्षेत्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करें तथा उसे समावेशी, सशक्त और वैश्विक भाषा के रूप में आगे बढ़ाएँ।

“जय हिन्द, जय हिन्दी”

लेख

गौरव गोयल
सहायक महाप्रबन्धक (वायु यातायात प्रबंधन)
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज

"आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है"

अथाह सागर के समान विशाल गतिमान का नाम ही जीवन है और यह अनमोल जीवन चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ "मनुष्य" को ही प्राप्त हुआ है तथा यह इस प्रकार से औरों से पृथक है कि मनुष्य ही एक बुद्धिमान और विवेकशील प्राणी है, जो हर समस्या का समाधान खोजने की क्षमता रखता है।

जब मनुष्य के जीवन में कठिनाइयाँ व चुनौतियाँ आती हैं, तब वह नये विचारों व आविष्कारों की ओर अग्रसर होता है। इसी सत्य को यह प्रसिद्ध कहावत भी सिद्ध करती है —

"जहाँ चाह, वहाँ राह।"

सत्य है कि इच्छा और आवश्यकता मिलकर सफलता का मार्ग बनाती हैं।

अर्थ एवं महत्व:

हर आविष्कार के पीछे किसी न किसी आवश्यकता का होना आवश्यक है। बिना आवश्यकता के न तो खोज होती है न ही प्रगति संभव है।

"समस्या ही समाधान का
पहला कदम होता है।"

जब मनुष्य किसी कठिनाई का सामना करता है, तभी उसके भीतर नये सृजन व सूझबूझ का विकास होता है। उदाहरण द्वारा स्पष्टता: - इतिहास भी इस तथ्य का प्रमाण है।

अंधकार और ठंड से बचने के लिये आग की खोज हुई। दूरी को कम करने हेतु पहिये का आविष्कार हुआ। आधुनिक समय में, विशेषकर कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा और सामान्य दिनचर्या को सुचारु व निरंतर बनाने के लिये ऑनलाइन प्रणाली का जन्म हुआ। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि—

"कठिनाइयाँ ही सफलता की सीढ़ी बनती हैं।"

इसी प्रकार किसानों की सुविधा के लिये विभिन्न आधुनिक कृषि उपकरण और नकदी रहित लेन-देन के लिये डिजिटल भुगतान प्रणाली विकसित हुई।

इसके अतिरिक्त भी अनेक आविष्कार उदाहरण स्वरूप हैं—

• **बिजली का आविष्कार — अंधकार** और काम को आसान बनाने हेतु बिजली का आविष्कार हुआ।
• **मोबाइल, इंटरनेट का आविष्कार** — दूर बैठे लोगों से संवाद हेतु मोबाइल व तेज और आसान जानकारी साझा करने के लिये इंटरनेट का जन्म हुआ।
• **विमान का आविष्कार** — कम समय में दूरी तय करने के लिये विमान का आविष्कार हुआ।
• **चिकित्सा क्षेत्र में अनेक आविष्कार** — बीमारियों के उपचार व बचाव की आवश्यकता ने वैक्सीन व दवाइयों के आविष्कार को संभव बनाया।
• **जल संरक्षण तकनीक** — पानी की कमी से वर्षा जल संचयन को जन्म मिला।

इन सभी से इस बात की पुष्टि होती है कि—
"कठिन परिस्थितियाँ ही मनुष्य की असली प्रतिभा को उजागर करती हैं।"
और "जहाँ समस्या होती है वहीं समाधान का भी जन्म होता है।"

जीवन में उपयोगिता:

आवश्यकता मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार से उपयोगी है—
* यह रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देती है।
* आपदा को अवसर में बदलने की प्रेरणा देती है।
* आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाती है।
* जीवन को सरल, सहज व सुविधाजनक बनाती है।
* समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वास्तव में — "हर चुनौती वह बीज होती है जिसमें संभावनाओं के अंकुर छिपे होते हैं।"

निष्कर्ष:

अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है अर्थात जरूरत ही खोज का मूल होती है। यह मनुष्य को आगे बढ़ने, सोचने और नये-नये प्रयोग करने के लिये प्रेरित करती है। हमें कठिनाइयों से घबराने के बजाय उन्हें अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि इन्हीं आवश्यकताओं से महान आविष्कार जन्म लेते हैं। इस प्रकार मानव जीवन प्रगति की ओर सतत अग्रसर होता है।

नहीं, उदास मत हो,
चाहे जीवन कष्टों से अंधकारमय हो,
समय अपने मार्ग पर न तो रुकेगा
और न ही विलंब करेगा;
आज जो इतना लंबा, इतना अजीब,
इतना कड़वा लगता है,
वह जल्द ही बीता हुआ कल बन जाएगा।

सरोजिनी नायडू

हिन्दी व्याकरण लेख

आचार्य पण्डित पृथ्वीनाथ पाण्डेय की पाठशाला

(व्याकरणवेत्ता, भाषाविज्ञानी एवं मीडियाध्ययन-विशेषज्ञ), प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)

हमने यहाँ कुछ शब्दचिन्तन करते हुए, शब्दसंधान किये हैं। जनसामान्य और जनविशिष्ट-वर्ग शब्दों का प्रयोग तो करते हैं; परन्तु उसके भाव, अर्थ और अवधारणा से अवगत नहीं रहते। वैसे मानसपटल पर सहस्रादिक ('सहस्रादिक' अशुद्ध है।) शब्द, अर्थ और व्यवहार अंकित हैं; परन्तु पत्रिका की शब्दसीमा को समझते हुए, यहाँ कतिपय शब्दचिन्तन को प्रस्तुत किया गया है।

शब्दचिन्तन– प्रथम

◆ **आयोजन 'संध्या मे' वा 'पूर्व-संध्या' मे किया जाता है, 'संध्या पर' वा 'पूर्व-संध्या पर' नहीं**

…………………………………

हमने अपने कथन को सत्य सिद्ध करने के लिए नीचे दो प्रकार के प्रश्न अंकित किये हैं, जिनपर क्रमश: 'व्याकरणीय व्यायाम' करते हुए, उनके शुद्ध रूप को भी प्रकट भी किये हैं। आप तन्मय होकर एक-एक शब्द की प्रकृति को समझें और विचार करें– हमारा सुशिक्षित समाज किस आधार पर अशुद्ध और आपत्तिजनक प्रयोग करता आ रहा है।

प्रश्न– अधोटंकित वाक्यों मे ('प' वर्ग का पंचमाक्षर 'म' अनुस्वारयुक्त है अत: म की मात्रा 'ए' पर अलग से अनुस्वार का व्यवहार नहीं होगा।) से कौन-सा वाक्य शुद्ध है वा दोनो ('त' वर्ग का पंचमाक्षर 'न' भी अनुस्वारयुक्त है।) ही शुद्ध नहीं हैं? इसे सकारण बतायें–

(१) रक्षाबन्धन के पूर्व संध्या पर एक आयोजन आयोजित होगा।

(२) रक्षाबन्धन के पूर्व वाली संध्या पर एक आयोजन का आयोजन किया जाएगा।

सकारण उत्तर–

उपर्युक्त ('उपरोक्त' अशुद्ध शब्द है।) दोनो वाक्य अशुद्ध हैं।

हमारा प्रथम वाक्य है :–

◆ रक्षाबन्धन के पूर्व संध्या पर एक आयोजन आयोजित होगा।

इस वाक्य मे लिंग, समास, कारक, पुनरुक्ति तथा क्रियादोष/क्रिया-दोष हैं; कैसे? समझें।

'रक्षाबन्धन' के आगे सम्बन्धबोधक कारक-लक्षण 'के' दिख रहा है और उसके ठीक बाद 'पूर्व संध्या पर'। इस वाक्यांश का अर्थ है– 'रक्षाबन्धन के पूर्व संध्या पर', जोकि अशुद्ध है; कारण कि वाक्यांश के अन्त मे 'पूर्व संध्या' है, जोकि लिंग की दृष्टि से स्त्रीलिंग-शब्द हैं, इसलिए 'रक्षाबन्धन के' के स्थान पर 'रक्षाबन्धन की' लिखा जायेगा। इसप्रकार हमारा वाक्यांश दिखता है– 'रक्षाबन्धन की पूर्व संध्या पर', जोकि अब भी शुद्ध नहीं है। यहाँ दो प्रकार के दोष हैं :– पहला, 'समास' से सम्बन्धित और दूसरा, 'कारक' से सम्बन्धित। 'पूर्व संध्या' अर्थ की दृष्टि से सार्थक शब्द नहीं हैं; क्योंकि दोनो ही अलग-अलग हैं। जब हम इन्हें 'षष्ठी तत्पुरुष समास'/'सम्बन्धबोधक कारक के नियम/चिह्न के अन्तर्गत जोड़ेंगे तब इसका एकीकृत अर्थ प्रकट होगा। हमने जैसे ही इन्हें जोड़ा वैसे ही दोनो एकरूप हो गये। अब हमे इस शब्द का अर्थ 'पूर्व की संध्या' 'पूर्वसंध्या'/'पूर्व-संध्या'/'पूर्व की संध्या'/'पहले की शाम' प्राप्त हुआ। इसप्रकार हमारा वाक्यांश गठित होता है– रक्षाबन्धन की पूर्वसंध्या/पूर्व-संध्या पर। यह अब भी अशुद्ध है; क्योंकि 'पूर्वसंध्या पर' वा 'पूर्व-संध्या पर' दोषयुक्त/दोष-युक्त है। इसमे दिख रहे 'पर' अधिकरणकारक की सप्तमी विभक्ति के लक्षण ('ट' वर्ग का अनुस्वारयुक्त पंचमाक्षर 'ण' है।) :– मे, पे, पै तथा पर' मे से 'पर' चिह्न है, जोकि यहाँ अर्थ की दृष्टि से अशुद्ध है। यहाँ इसी कारक के लक्षण 'मे' का प्रयोग होगा।

मीडिया (मुद्रित-वैद्युत-माध्यम) मे एक 'फ़ैशन' बन गया है।

उदाहरण के लिए– (किसी भी अवसर पर) 'पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम/समारोह.... का प्रयोग। यह पूर्णत: अशुद्ध और आपत्तिजनक है; क्योंकि हम व्याकरण के नियमानुसार, आज की रात्रि 'मे'/दिवस 'मे'/रात 'मे'/दिन 'मे'/दोपहर 'मे'/बीते हुए दिन 'मे'/आनेवाली रात्रि 'मे',

आनेवाले दिन की पहली शाम 'मे' का व्यवहार करते आ रहे हैं, जोकि सर्वथा शुद्ध और उपयुक्त है।

आपने कभी 'दिन पर' काम करूँगा। 'रात्रि पर' सोऊँगा। वाक्यों का प्रयोग सुना है वा किया है? निस्संदेह, नहीं।

आप अब शुद्ध और उपयुक्त प्रयोग देखें–

कार्यक्रम का आयोजन 'दिन मे' होगा।

उपर्युक्त नियम के आधार पर हमारा सर्वशुद्ध वाक्यांश दिखता है– 'रक्षाबन्धन की पूर्वसंध्या/पूर्व-संध्या मे'।

हम अब इसके आगे के शब्दप्रयोग/शब्द-प्रयोग पर विचार करेंगे।

हमारे वाक्य का अगला अंश (यहाँ 'वाक्यांश' अशुद्ध है।) है :– 'एक आयोजन आयोजित होगा।' यहाँ शब्दप्रयोग की दृष्टि से 'एक आयोजन' शुद्ध है और 'आयोजित होगा।' भी; परन्तु हम 'एक आयोजन आयोजित होगा।' कहते हैं, तब हमे वाक्यांश-रचना खटकती है; क्योंकि 'आयोजन' के साथ 'आयोजित' का प्रयोग करना, भयंकर दोष की श्रेणी के अन्तर्गत रेखांकित होगा। यदि 'आयोजन' के स्थान पर किसी कार्यक्रम का नाम वा केवल 'कार्यक्रम' का उल्लेख रहता तो 'आयोजित' का प्रयोग सार्थक कहलाता है। उदाहरण के लिए– 'घटना घटित होगी' को देखें, जोकि अशुद्ध प्रयोग है; क्योंकि 'घटना ही घटित' होती है। इस 'घटना' मे ही 'घटित' है और 'घटित' मे ही 'घटना' है। घटना हुई; घटना की गयी वा फिर घटित हुई– ये वाक्य शुद्ध और उपयुक्त हैं। हमे विश्वास है, आप सब इस दोष को दूर कर लिये होंगे।

इस पूरे वाक्य की क्रिया 'होगा।' भी विचारणीय है; क्योंकि प्रसंगवश, यहाँ दो क्रियाएँ हैं :– 'होगा' और 'किया जायेगा'। उदाहरण के लिए– 'यह काम होगा।' और 'यह काम किया जायेगा।' दोनो ही क्रिया-प्रयोग मे बहुत अन्तर है। हमे ध्यान करना होगा कि उपर्युक्त वाक्य मे 'आयोजन' है, जोकि 'किया जाता' है, 'होता नहीं' है। इसप्रकार हमारा यह वाक्यांश शुद्धता के साथ प्रत्यक्ष होता है :– 'एक आयोजन किया जायेगा।' वा 'एक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।' वा 'एक कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।'

अब इस वाक्य को देखें– रक्षाबन्धन की पूर्वसंध्या/पूर्व-संध्या मे एक आयोजन किया जायेगा।
आप समझते होंगे कि अब प्रथम वाक्य पूरी तरह से शुद्ध हो चुका है, जबकि ऐसा नहीं है; क्योंकि जब हम उपर्युक्त वाक्य पर व्याकरण की दृष्टि से विचार करते हैं तब ज्ञात होता है कि प्रत्येक शब्द को शुद्ध करने के बाद भी 'वाक्य' पूर्णत: शुद्ध नहीं है। उल्लेखनीय है कि जब हिन्दी-व्याकरण के अन्तर्गत किसी वाक्य का गठन किया जाता है तब हमे प्रथम स्थान पर कर्त्ता, द्वितीय स्थान पर कर्म, तृतीय स्थान पर पूरक शब्द (यदि रहे तो) तथा अन्त मे क्रिया-शब्द को सुव्यवस्थित करना पड़ता है। इसी के आधार पर 'वाक्य-विश्लेषण' भी किया जाता है। उदाहरण के लिए– 'मै अध्ययन करने के बाद ही सोऊँगा।' वाक्य को यदि 'अध्ययन करने के बाद ही मै सोऊँगा।' का व्यवहार करते हैं तो हमारा वाक्य अशुद्ध हो जायेगा।

इसप्रकार वाक्य-गठन करने के उपर्युक्त नियम के आधार पर हमारे शुद्ध वाक्य का गठन होगा–

● एक आयोजन रक्षाबन्धन की पूर्वसंध्या/ पूर्व-संध्या मे किया जायेगा।

हमारा द्वितीय वाक्य है :–

◆ रक्षाबन्धन के पूर्व वाली संध्या पर एक आयोजन का आयोजन किया जाएगा।

इसमे प्रथम वाक्य से सम्बन्धित जितने नियम बताये गये हैं, उनका बोध करते हुए इस वाक्य को भी शुद्ध करना होगा। इस वाक्य मे 'पूर्व वाली' के स्थान पर 'पूर्व' और 'वाली' को मिलाकर लिखेंगे वा योजकचिह्न (-) का प्रयोग करके लिखेंगे; क्योंकि 'वाली' हिन्दी का स्त्रीलिंग-प्रत्यय है, इसलिए ऐसे लिखेंगे– 'पूर्ववाली'/'पूर्व-वाली'/। 'एक आयोजन का आयोजन' के स्थान पर 'एक आयोजन' हो जायेगा। अन्त मे दिख रहे क्रियात्मक शब्द 'किया जाएगा' मे 'जाएगा' के स्थान पर 'जायेगा' हो जायेगा; क्योंकि इसका मूल शब्द 'जाय' और 'जाये' है। इस 'जाये' से 'जायेगी', 'जायेगा' इत्यादिक क्रिया-शब्दों का सर्जन ('सृजन' अशुद्ध है।) किया जाता है।

इसप्रकार हमारे द्वितीय वाक्य का शुद्ध रूप है :–

● एक आयोजन रक्षाबन्धन की पूर्ववाली/पूर्व-वाली संध्या मे किया जायेगा।

शब्दचिन्तन– द्वितीय

◆ **मन-मस्तिष्क को एकाग्र करने का स्वभाव बनायें**

शब्द हैं :– मन, मस्तिष्क, मानस, दिमाग़, भेजा, मग्ज तथा अक़्ल।

मन :–

यह संस्कृत-भाषा के शब्द 'मनस्' से उत्पन्न हुआ है, जिसे 'मन:' भी कहते हैं यह शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग की दृष्टि पुंल्लिंग-शब्द। यह 'मन्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'मानना' है। इस धातु मे 'असुन्' प्रत्यय के जुड़ते ही 'मन' शब्द की व्युत्पत्ति होती है। इसका अर्थ 'मानस' है। इसे 'अन्त:करण' और 'चित्त' भी कहा जाता है। इसके भिन्नार्थी शब्द हैं :– इच्छा; इरादा; मणि; चालीस सेर की एक तोल; अन्त:करण की चार वृत्तियों मे से एक, जिससे संकल्प-विकल्प होता है; आदिक।

'मन' से सम्बन्धित परीक्षोपयोगी मुहावरे देखें–

(१) मन हरा होना– चित्त प्रसन्न रहना।

(२) मन बढ़ाना– साहस/उत्साह बढ़ाना।

(३) मन टूटना– साहस छूटना।

(४) मन के लड्डू खाना– व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना।

(५) मन फेरना– मन को किसी ओर से हटाना।

(६) मन मैला करना– अप्रसन्न वा असंतुष्ट होना।

(७) मन मोटा होना– उदासीन होना।

हम यहाँ 'मन' के साथ जुड़े कुछ शब्दों पर विचार करेंगे।

'मनकामना' संस्कृत-भाषा के शब्द 'मन:कामना' से निर्गत हुआ है। जो विद्यार्थी 'मनोकामना' का व्यवहार करते हैं, वे अशुद्ध हैं यह शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग की दृष्टि से स्त्रीलिंग-शब्द। इसका अर्थ है, 'मनोरथ'। अरबी-भाषा का विशेषण-शब्द 'मन्क़ूल' है, जिसका अर्थ है, 'जिसकी प्रतिलिपि तैयार कर ली गयी हो'। इसके अन्य समानार्थी शब्द हैं :– प्रतिलिपित, नक़्ल ('नक़ल' अशुद्ध है।) किया हुआ इत्यादिक। इसके अन्य समानार्थी शब्द हैं :– चल-सम्पत्ति; जो सम्पत्ति एक स्थान से दूजे स्थान पर लायी जा सके। एक पद देखें– मनक़ूला जायदाद, जिसका अर्थ है, 'चल-सम्पत्ति'। स्थानिक बोली वा भाषा का एक विशेषण-शब्द 'मनमुखी' है, जिसका अर्थ है, 'स्वेच्छाचारी' वा 'मनमाना काम करनेवाला'।

'मनसा' संस्कृत-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग की दृष्टि से स्त्रीलिंग-शब्द। इस शब्द का सर्जन 'मनस्' मे 'अच्' और 'टाप्' प्रत्ययों के योग से होता है। इसका अर्थ 'मनसा देवी' है। जब हम इसी शब्द पर विशेषण के रूप मे विचार करते हैं तब इसके तीन अर्थ प्राप्त होते हैं :– मन से उत्पन्न; मन-सम्बन्धी तथा मन का। यदि इस शब्द को क्रिया-विशेषण के रूप मे देखें तो हमे इसके दो अर्थ प्राप्त होते हैं :– मन से तथा मन के द्वारा।

'मनसा' से ही मिलता-जुलता शब्द 'मंशा' है, जोकि अरबी-भाषा का शब्द है। इसे 'इरादा' वा 'विचार' कहते हैं इसके भिन्नार्थी शब्द हैं :– मन; बुद्धि; अभिप्राय; अभिलाषा; उद्देश्य आदिक।

मस्तिष्क :–

यह संस्कृत-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग की दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। यह 'इष्' धातु का शब्द है। इस धातु मे 'क' का योग है। इसमे 'पृषोदरादित्वात् सिद्धि' है। इसका आशय यह है कि 'पृषोदरादित्वात् सिद्धि' पाणिनीय व्याकरण का संकेत है, जिसका अर्थ है, 'पृषोदर' इत्यादिक शब्दोँ की भाँति से शब्दोँ की सिद्धि। जिन शब्दोँ की सिद्धि पाणिनीय सूत्रोँ से नहीँ हो पाती, उसके लिए उपर्युक्त विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णो के आगम, व्यत्यय, लोप आदिक आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

'मस्तिष्क' का अर्थ 'दिमाग़' है। इसका एक अन्य अर्थ 'मस्तक के भीतर का गूदा' है। 'बुद्धि के रहने का स्थान' भी 'मस्तिष्क' है। इसके समानार्थी शब्द हैँ :– भेजा, मग्ज इत्यादिक। अब इसकी परिभाषा समझेँ– वह मानसिक शक्ति, जिसके माध्यम से जीवधारी सोचने और समझने का कार्य करता है, उसे 'मस्तिष्क' कहते हैं। इसे स्थानिक बोली वा भाषा मे 'मस्तिक' कहा जाता है। ऐसा इसलिए कि सम्बन्धित अंचल के लोग 'मस्तिष्क' मे दिख रहे 'ष्क' का उच्चारण नहीँ कर पाते, जिसके कारण 'ष्क' का 'ष्' लुप्त हो जाता है।

'मस्तिष्क' का विशेषण-शब्द 'मास्तिष्क्य' है। इस शब्द का सर्जन 'मस्तिष्क' मे 'व्यज्' प्रत्यय के जुड़ने से होता है। इसके अर्थ हैँ :– मस्तिष्क से सम्बन्धित तथा मस्तिष्क का। उदाहरण के लिए– मास्तिष्क्य उद्घाटन।

मानस :–

यह संस्कृत-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग की दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। इसका अर्थ 'मन' है। इसके भिन्न-भिन्न अर्थ हैँ :– हृदय; मानसरोवर; मनुष्य; संकल्प-विकल्प; कामदेव आदिक।

'मानस' शब्द से विशेषण-शब्द 'मानसिक' की रचना होती है। इसके लिए 'मानस' शब्द मे 'ठक्' प्रत्यय को जोड़ा जाता है। इसका अर्थ 'मन से सम्बन्धित' है। उदाहरण के लिए– मानसिक व्यायाम।

दिमाग़ :–

यह अरबी-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा और लिंगदृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द है। इसके भिन्न-भिन्न अर्थ हैँ :– अक़्ल; अहंकार; बुद्धि; गर्व; ख़याल; बरदाश्त; संज्ञा; गर्व; बरदाश्त आदिक।

अब 'दिमाग़' से सम्बन्धित कुछ परीक्षोपयोगी ('परीक्षापयोगी' अशुद्ध है।) मुहावरोँ को अर्थसहित समझेँ–

(१) दिमाग़ लड़ाना– किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए अत्यधिक सोच-विचार करना।

(२) दिमाग़ झड़ना– घमण्ड दूर हो जाना।

(३) दिमाग़ मे खलल होना– विक्षिप्त (पागल) की स्थिति प्राप्त करना।

(४) दिमाग़ ख़ाली करना– दिमाग़ चाटना।

'दिमाग़' का विशेषण-शब्द 'दिमाग़ी' है, जिसके अर्थ हैँ :– दिमाग़ से सम्बन्धी, दिमाग़ से सम्बन्ध रखनेवाला, मानसिक, मस्तिष्क से सम्बन्धित इत्यादिक। उदाहरण के लिए– दिमाग़ी श्रम।

'दिमाग़दार' अरबी-फ़ारसीभाषा का शब्द है। ऐसा इसलिए कि 'दिमाग़' अरबी-भाषा का शब्द है और इसमे युक्त 'दार' प्रत्यय फ़ारसी-भाषा का है। 'दिमाग़दार' शब्दभेद के विचार से विशेषण-शब्द है। इसके समानार्थी शब्द हैँ :– अभिमानी, मग़रूर ('मगरूर' अशुद्ध है।), घमण्डी, अहंकारी इत्यादिक। 'दिमाग़दार' का संज्ञा-शब्द 'दिमाग़दारी' स्त्रीलिंग-शब्द है। इसमे अरबी-भाषा के शब्द 'दिमाग़' के साथ फ़ारसी-भाषा का 'दारी' प्रत्यय जुड़ा हुआ है, इसलिए यह शब्द अरबी-फ़ारसीभाषा का है। इसके समानार्थी शब्द हैँ :– अभिमान, गर्व, गुरूर, अहंकार, दर्प इत्यादिक।

भेजा :–

यह हिन्दी-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग का। इसका अर्थ 'मस्तिष्क' है। इसके समानार्थी शब्द हैँ :– दिमाग़, मग्ज इत्यादिक।

एक चर्चित मुहावरा देखेँ–

भेजा खाना– बकवाद करना।

अब इसी 'भेजा' शब्द को देखेँ, जिसका रूप पूर्णत: बदला हुआ दिख रहा है। यह 'भेजा' शब्दभेद के विचार से क्रिया (सकर्मक) है, जो 'भेजना' का अनिश्चित भूतकाल काल का शब्द है। इसमे किसी व्यक्ति वा वस्तु को कहीँ-से-कहीँ रवाना करने, पठाने वा पठवाने की क्रिया है। इसकी प्रेरणार्थक क्रिया 'भेजवाना' ('भिजवाना' अशुद्ध है।) है। 'भेजा' के समानार्थी शब्द हैँ :– पठाया, प्रेषित किया, भेज दिया इत्यादिक

उदाहरण के लिए–

(१) उसने मेरे पड़ोसी के घर कल अपना नौकर भेजा।

(२) मैने अपने एक शुभचिन्तक के नाम अपना पत्र भेजा।

मग्ज :–

यह अरबी-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। इसका अर्थ 'मस्तिष्क' है। हमारे सभी विद्यार्थी इस शब्द का प्रयोग 'मगज' करते हैँ, कारण कि उन्हेँ यही पढ़ाया-बताया तथा समझाया जा रहा है। 'मगज' अशुद्ध शब्द है।

'मग्ज' के भिन्नार्थी शब्द हैँ :– गूदा; गिरी; सार; निष्कर्ष; अक़्ल; परिणाम आदिक।

'मग्ज' से सम्बन्धित कुछ परीक्षोपयोगी मुहावरे देखेँ–

(१) मग्जपच्ची/ मग्ज मारना वा मग्ज खाना– किसी काम मे अत्यधिक दिमाग़ खपाना।

अक़्ल :–

यह अरबी-भाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा-शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। इसका अर्थ 'बुद्धि' है। इसके समानार्थी शब्द हैं :– धी, प्रज्ञा, मेधा इत्यादिक। इसके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं :– समझ/बोध; विवेक; सूझबूझ; चतुराई; शिष्टाचार आदिक।

यदि हम 'अक़्ल' को 'अक्ल' लिखेंगे (नुक़्त:/नुक्ता को हटाकर) तो अनर्थ हो जायेगा, तब 'अक्ल' का अर्थ 'भोजन करना' हो जायेगा। 'अक्ल' भी अरबी-भाषा का शब्द है, जो 'अक़्ल' की ही तरह शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द; परन्तु एक नुक्ता के हेर-फेर से अर्थ मे कितना बड़ा बदलाव दिखता है। यहाँ नुक्ता-प्रयोग करने का विरोध करनेवालों के लिए एक सीख है।

अब 'अक़्ल' से सम्बन्धित अति उपयोग के मुहावरों को समझें–

(१) अक़्ल के घोड़े दौड़ाना– अनेक प्रकार की बौद्धिक कल्पना करना।

(२) अक़्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरना– हर समय मूर्खतापूर्ण कार्य करना।

(३) अक़्ल का दुश्मन/पूरा– मूर्ख।

(४) अक़्ल का पुतला– अत्यन्त बुद्धिमान।

हम 'अक़्लमन्द' और 'अक़्लमन्दी' शब्दों पर विचार करेंगे। ये दोनो शब्द अरबी-फ़ारसी के हैं; क्योंकि 'अक़्ल' अरबी-भाषा का शब्द है तथा क्रमश: 'दार' और 'दारी' फ़ारसी-भाषा के प्रत्यय हैं ये शब्दभेद की दृष्टि से संज्ञा-शब्द हैं तथा लिंग-दृष्टि से क्रमश: पुंल्लिंग और स्त्रीलिंग-शब्द। 'अक्लमन्द' का अर्थ 'बुद्धिमान्' है। इसके अन्य समान अर्थ हैं :– समझदार, मेधावी, तेज़, अक़्लवाला इत्यादिक। 'अक़्मन्दी' का अर्थ 'बुद्धिमत्ता' वा 'बुद्धिमानी' है। इसे 'समझदारी' भी कहते हैं।

शब्दचिन्तन– तृतीय

◆ 'अभिमान' करो; परन्तु 'अहंकार' और 'घमण्ड' कदापि नहीं

शब्द हैं :– अभिमान, अहंकार, घमण्ड तथा दर्प।

जीवन जीने की वास्तविक कला वही सीख सकने मे समर्थ रहता है, जो विनयशील है। 'अहंकार' विनयशीलता का आहार है, इसलिए सदाशयता एवं सौजन्य का स्वभाव सदैव धारण किये रहना चाहिए।

'अभिमान' यदि पथभ्रष्ट नहीं होता हो तो उसमे संतुष्टि का भाव है और गौरव का भी।

नीचे दिये गये सारे शब्द स्वयं मे बहुवचन के हैं, इसलिए यदि 'अभिमानो', 'अहंकारों', 'घमण्डों' तथा 'दर्पों' का प्रयोग किया जाता है तो उसे पूर्णत: अशुद्ध माना जायेगा।

तो आइए! हम उन शब्दों के साथ क्रमश: जुड़ते हैं।

अभिमान :– 'अभिमान' शब्द संस्कृत-भाषा से उत्पन्न हुआ है, जो कि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। यह 'मन्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'मानना' और जानना' है। इस धातु के पूर्व मे 'अभि' उपसर्ग लगा हुआ है, जो कि श्रेष्ठता का द्योतक है। इस धातु के पश्चात् मे 'घञ्' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। इसप्रकार 'अभिमान' शब्द की रचना होती है। इसका अर्थ 'आत्मगौरव', 'गर्व' इत्यादिक है। बहुसंख्यजन 'अभिमान' को 'अहंकार', 'घमण्ड' इत्यादिक रूप मे प्रयोग करते आ रहे हैँ, जो कि उपयुक्त नहीँ है; क्योँकि हम यदि इसका शाब्दिक अर्थ निकालते हैँ तो 'अभिमान' मे दिख रहे 'अभि' उपसर्ग का अर्थ 'उत्तम' वा 'श्रेष्ठ' है और बाद के शब्द 'मान' का अर्थ 'समादर' वा 'प्रतिष्ठा'। इसप्रकार 'अभिमान' का अर्थ नकारात्मक अर्थ मे कदापि नहीँ होगा, जबकि देश की शिक्षा-व्यवस्था ने 'अभिमान' को नकारात्मक 'अहंकार' के अर्थ मे मान्यता दे दी है। खेद है! तत्कालीन समस्त व्याकरणाचार्य उस कुकृत्य का प्रतिवाद तक न कर सके। यही कारण है कि इसके समानार्थी शब्द मान लिये गये हैँ :– गर्व, अहंकार, घमण्ड, मद, दर्प इत्यादिक। हमारी दृष्टि मे 'अभिमान' के समानार्थी शब्द हैँ :– उत्तम सम्मान, उत्कृष्ट प्रतिष्ठा, श्रेष्ठ स्थान इत्यादिक।

पत्रकार और क्रान्तिधर्मी गणेशशंकर विद्यार्थी-द्वारा सम्पादित 'प्रताप' समाचारपत्र के प्रत्येक अंक के मुखपृष्ठ पर समाचारपत्र के नाम के ठीक नीचे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त-रचित अध: मुद्रित पंक्तियाँ के माध्यम से यह संदेश योँ ही नहीँ सार्वजनिक किया गया था; प्रत्युत उसके मूल मे वास्तविक 'अभिमान' का भाव छलकता था। आप भी उसका रसास्वादन करेँ :–

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीँ, नर-पशु निरा है और मृतक सम्मान है।"

हम 'अभिमान' के वैशिष्ट्य को इस प्रकार विभाजित कर सकते हैँ :– अन्य से अत्युत्तम/बेहतर होने की भावना वा विचार; अपने जीवनमूल्य के विषय मे अत्यधिक चिन्तन; अपनी योग्यता वा जीवनमूल्य के विषय मे उपयुक्त और न्यायोचित भावना। इसके अन्य अर्थ माने गये हैँ :– अपनी प्रतिष्ठा के सम्बन्ध मे बनायी गयी प्राय: अतिरिक्त और अनुचित धारणा; अपनी प्रतिष्ठा की कल्पना वा ज्ञान; आक्षेप आदिक। हम स्वविवेक से 'अभिमान' का अर्थ-विस्तार करते हुए, उसकी दस कोटि निर्धारित कर सकते हैँ :– (१) कुल वा वंश-परम्परा का अभिमान (२) चरित्र एवं जीवन-मूल्य का अभिमान (३) अनुभवसम्पन्नता का अभिमान (४) शक्ति का अभिमान (५) सत्ता का अभिमान (६) बाह्य व्यक्तित्व का अभिमान (७) कर्त्तव्य-ज्ञान का अभिमान (८) विद्वत्ता का अभिमान (९) सम्पत्ति का अभिमान (१०) भौतिकवादिता का अभिमान।

जब इन दस कोटि ('कोटियाँ' अशुद्ध है।) मे वर्गीकृत अभिमान मे से कोई कोटि अपना संतुलन खो देती है तब कहीँ 'अभिमान' नकारात्मक अर्थ के साथ जुड़ने लगता है। उदाहरण के लिए 'अभिमान' के एक प्रमुख अर्थ 'गर्व' का नकारात्मक अर्थ भी हो सकता है, जो कि आवश्यकता से अधिक आत्मसम्मान का अर्थ ध्वनित करता है।

यहीँ पर 'अभिमान' और 'स्वाभिमान' का अन्तर भी सुस्पष्ट होने लगता है।

'अभिमान' और 'स्वाभिमान' मे अन्तर

- **'अभिमान' मनुष्य को क्रुद्ध करता है।**

◆ 'स्वाभिमान' मनुष्य को क्रोधरहित करता है।

● 'अभिमान' अन्य को तुच्छ रूप मे देखता है।

◆ 'स्वाभिमान' अन्य की प्रतिष्ठा करने मे सहायक सिद्ध होता है।

● 'अभिमान' निरंकुशता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

◆ 'स्वाभिमान' संतुलित रहकर कर्त्तव्यपथ पर चलते रहने का ज्ञान और भान कराता है।

'अभिमान' का विशेषण-शब्द 'अभिमानी' है, जोकि संस्कृत-भाषा के शब्द 'अभिमानिन्' से निर्गत है। अब इसकी रचना-प्रक्रिया को समझें। यह 'मानना' और 'जानना' के अर्थ मे 'मन्' धातु-शब्द है, जिसके पूर्व मे 'अभि' उपसर्ग है और अन्त मे 'णिनि' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। इसप्रकार 'अभिमानी' शब्द की रचना होती है। इसका अर्थ है, 'जिसे अभिमान हो'। 'अभिमान करनेवाला' को भी 'अभिमानी' कहा जाता है, जिसके समानार्थी शब्द हैं :– प्रतिष्ठित, गौरवशाली, गर्वमण्डित, सम्मानित इत्यादिक। इसके लिए अन्य समानार्थी शब्द भी निर्धारित किये गये हैं :– घमण्डी, अहंकारी इत्यादिक। इसके भिन्नार्थी शब्द हैं :– अकड़बाज़; अनादर से खिन्न; अभिमानयुक्त; आक्षेपान्वित आदिक। इसका स्त्रीलिंग-शब्द 'अभिमानिनी' है। 'अभिमान करनेवाली' को 'अभिमानिनी' कहा गया है। एक शब्द 'अभिमानजनक' है, जो कि शब्दभेद के विचार से विशेषण-शब्द है। इसे 'गर्वीला' कहते हैं और 'अहम्मन्य' भी।

अहंकार :–

हमे 'अहंकार' शब्द को समझने के पूर्व 'अहं' का बोध करना होगा; क्योंकि इसी शब्द से 'अहंकार' की उत्पत्ति होती है। 'अहं'/'अहम्' सर्वनाम-शब्द 'अस्मद्' के एकवचन का शब्द है, जिसका 'मैं' के अर्थ मे व्यवहार होता है और यही 'मैं' 'अहंकार' उत्पन्न करने का मूल कारण है। इसी का एक रूप "अहं ब्रह्मास्मि" है और "एकोऽहम् द्वितीयोनास्ति" भी।

'अहं' की उत्पत्ति के मूल मे 'अह्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'व्याप्त करना'/'व्याप्ति' है। इस धातु मे 'अहं' प्रत्यय के जुड़ने से 'अहं' शब्द की उत्पत्ति होती है। इसका अर्थ 'अहंकार' है।

हम अब 'अहंकार' शब्द का अध्ययन करेंगे। यह 'कृ' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'करना' है। इस धातु के पूर्व मे 'अहं' है और पश्चात् मे 'घञ्' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। 'मन मे रहनेवाला 'मैं' और 'मेरे' का भाव', 'अहं भाव' को 'अहंकार' कहा जाता है। इसके समानार्थी शब्द हैं :– अभिमान, गर्व, शेख़ी, मद, दम्भ इत्यादिक।

हम अब 'अहंकार' से सम्बन्धित शब्दों का बोध करेंगे। 'अहंकारी' को 'अहंकार करनेवाला' और 'अभिमानी' कहा जाता है। 'अहंकृत' शब्दभेद के विचार से विशेषण का शब्द है, जो कि 'कृ' धातु का है, जिसका अर्थ 'करना' है। इसके पूर्व मे 'अहं' है और पश्चात् मे 'क्त' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। 'अहंकृत' का अर्थ है, 'जिसे अपनी सत्ता का भान हो'। इसे 'अभिमानी' और 'घमण्डी' कहते हैं। 'अहंकृति' शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग की दृष्टि से स्त्रीलिंग का। यह 'कृ' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'करना' है। इस धातु के अन्त मे 'क्तिन्' प्रत्यय के जुड़ने से 'अहंकृति' शब्द की रचना होती है। इसके समानार्थी शब्द हैं :– अहंकार, दर्प, घमण्ड, मद इत्यादिक।

एक अन्य शब्द 'अहंता' है, जो कि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से स्त्रीलिंग-शब्द। 'अहं' शब्द मे 'तल्' और 'टाप्' प्रत्ययों के योग से 'अहंता' शब्द का सर्जन होता है, जिसके अर्थ हैं :– अहंकार, अभिमान, घमण्ड, दर्प इत्यादिक। इन्हीं शब्दों के अर्थ मे एक अन्य शब्द 'अहंपद' है, जो कि शब्दभेद के विचार से संज्ञा-शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। यह षष्ठी तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

अब 'अहम्मन्य' शब्द का बोध करें। यह शब्दभेद के विचार से विशेषण का शब्द है, जो कि धातु की दृष्टि से 'मन्' शब्द है, जिसका अर्थ 'मानना' है। इसके अन्त मे 'खश्' प्रत्यय के जुड़ते ही 'अहम्मन्य' शब्द का सर्जन होता है, जिसका अर्थ है, 'अपने को बहुत बड़ा माननेवाला'। इसी का संज्ञा-शब्द 'अहम्मन्यता' है, जो कि शब्दभेद के विचार से संज्ञा-शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से स्त्रीलिंग-शब्द। 'अहम्मन्य' मे 'तल्' और 'टाप्' प्रत्ययों के योग से 'अहम्मन्यता' शब्द की रचना होती है। विशेषण का एक शब्द 'अहम्मय' है, जिसकी रचना 'अहं' मे 'मयट्' प्रत्यय के योग से होती है। इसके अर्थ हैं :– अहंभाव से भरा हुआ, अहंकार से भरा हुआ, अत्यन्त अभिमानी इत्यादिक। जो अपने को महान् और दूसरे को तुच्छ समझता हो, वह 'अहमिका' कहलाता है। इसके भिन्नार्थी शब्द हैं :– चढ़ाऊपरी; होड़; प्रतियोगिता आदिक।

घमण्ड :–

यह हिन्दीभाषा का शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञाशब्द है तथा लिंगदृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द है। इसके समानार्थी शब्द हैं :– अभिमान, अहंकार, गर्व, दर्प इत्यादिक। इसे 'ज़ोर' कहते हैं। इसका विशेषण-शब्द 'घमण्डी' है। इसे 'अभिमानी' और 'अहंकारी' भी कहा गया है। 'घमण्डी' का स्त्रीलिंग-शब्द 'घमण्डिनी' है।

दर्प :–

यह संस्कृत-भाषा से उत्पन्न शब्द है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। यह 'दृप्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'गर्व करना' है। इसके अन्त मे 'घञ्' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। इसप्रकार 'दर्प' शब्द का सर्जन होता है। इसके समान अर्थवाले शब्द हैं :– अभिमान, घमण्ड, अहंकार इत्यादिक। इसके भिन्नार्थी शब्द हैं :– अक्खड़पन; वैभव एवं शक्ति का आतंक; दबाव; कस्तूरी आदिक। इसी से 'दर्पक' शब्द की रचना होती है, जोकि शब्दभेद के विचार से संज्ञा का शब्द है तथा लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। यह भी 'गर्व वा अहंकार करना' के अर्थ मे 'दृप्' धातु का शब्द है, जिसमे 'णिच्' और 'ण्वुल्' प्रत्यय जुड़े हुए हैं। इसका अर्थ है, 'अहंकार करनेवाला'। 'कामदेव' को भी 'दर्पक' की संज्ञा दी गयी है। एक अन्य शब्द 'दर्पित' है, जो कि विशेषण का शब्द है। इस शब्द का सर्जन करने के लिए 'अहंकार वा अभिमान करना' के अर्थ मे 'दृप्' धातु मे 'णिच्' और 'क्त्' प्रत्ययों को जोड़ा जाता है। इसका अर्थ है, 'जो अहंकार से युक्त हो'। 'जिसने अहंकार प्रदर्शित किया हो'। इसके समानार्थी शब्द हैं :– अभिमानी, घमण्डी, अहंकारी, दर्पी इत्यादिक।

अब 'दर्पी' शब्द को समझेंगे। यह मूलत: संस्कृत-भाषा के 'दर्पिन्' शब्द से निर्गत हुआ है, जो कि विशेषण-शब्द है। इसकी रचना 'दर्प' शब्द मे 'इनि' प्रत्यय के जुड़ने से हुई है। 'दर्पी' उसे कहा गया हो, जिसमे अहंकार हो। 'जिसने अहंकार का प्रदर्शन किया हो', वह भी 'दर्पी' है। इसके समानार्थी शब्द हैं :– अभिमानी, अहंकारी, घमण्डी इत्यादिक।

लेख

हिंदी भाषा की विकास यात्रा एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रासंगिकता

हिंदी भाषा की विकास यात्रा

एक भाषा के रूप में अगर हिंदी भाषा के विकास यात्रा की बात करें तो यह कहा जा सकता है कि यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया रही है। किसी भी भाषा के विकास में उस देश के समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हिंदी भाषा के विकास में भी समाज और संस्कृति ने अहम रोल निभाया है। यह उत्तर भारतीय राज्यों की मुख्य भाषा रही है। भारत की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत रही है और इसी भाषा के विभिन्न काल खंडों में अलग-अलग स्वरूपों में हुए परिवर्तन से हिंदी का विकास हुआ है।

संस्कृत भाषा से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से प्राचीन हिंदी और प्राचीन हिंदी से आधुनिक हिंदी का विकास हुआ है। आज हम जो हिन्दी बोलते हैं इसका विकास अपभ्रंश से हुआ है।

अगर हिंदी भाषा के विकास यात्रा को कालखण्डों में बांटकर देखें तो इसका विकास तीन चरणों में हुआ है : - पहला कालखंड 1100 ईस्वी - 1350 ईस्वी का माना जाता है, इसे प्राचीन हिंदी का काल कहा जाता है। दूसरा कालखंड मध्य काल (1350 ईस्वी - 1850 ईस्वी) कहा जाता है। इस काल में हिंदी भाषा की बोलियों अवधी और ब्रज में ढेरों साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। तीसरा कालखंड 1850 ईस्वी से अभी तक माना जाता है और इसे आधुनिक काल के नाम से जाना जाता है। इस कालखंड में हिंदी भाषा का स्वरूप बहुत तेजी से बदला है।

वास्तव में, इस कालखंड में हिंदी जन-जन की भाषा बन गई। स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में खूब प्रचार-प्रसार बढ़ा। इस दौर में हिंदी भाषा का असर इतना था था कि उत्तर भारत में ही नहीं बल्कि दक्षिण भारत से भी आने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किये जाने की वकालत की। हालांकि हिंदी भाषा को आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं प्राप्त हो सका है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी नें हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के ढेरों प्रयास किए। राष्ट्रभाषा सामान्य या आमलोगों की भाषा होती है और इसका प्रयोग बोलने, पढ़ने और लिखने में खूब किया जाता है। राष्ट्रभाषा किसी देश की एकता एवं अखंडता की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। महात्मा गांधी ने वर्ष 1917 में गुजरात के भरूच में हुए गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की बात की थी :-

"भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है; यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।"

संविधान सभा में हिन्दी को देश की राजभाषा बनाने को लेकर लंबी बहस चली और 3 दिन के बहस के बाद हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितंबर, 1949 को स्वीकार किया गया। लेकिन ब्रिटिश

शासन के दौरान सभी सरकारी नियम-कानून एवं अन्य दस्तावेज़ अँग्रेजी में होने के कारण तथा अन्य बहुभाषी राज्यों में भाषायी एकता एवं समरसता को बनाए रखने के दृष्टिकोण से हिन्दी के साथ –साथ अँग्रेजी को भी सहायक राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। प्रारम्भ में यह प्रावधान 15 वर्षों के लिए ही था और इसके साथ ही संसद को ये शक्ति प्रदान की गई कि संसद अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए अंग्रेजी के प्रयोग को आगे की अवधि के लिए बढ़ा सकता है।

वर्ष 1965 में केवल हिंदी को सम्पूर्ण भारत की राजभाषा बनाए जाने के समय के पूर्व ही गैर-हिंदी भाषी राज्यों का विरोध इस कदर तीव्र हो गया कि अंततः तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को गैर-हिन्दी भाषी राज्यों को ये आश्वासन देना पड़ा कि आपकी सभी की सहमति के बिना हिंदी को सम्पूर्ण भारत की राजभाषा नहीं बनाया जाएगा। अतः वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। वर्ष 1967 में इसे संशोधित किया गया। इसमें किये गए प्रावधानों से गैर-हिंदी भाषी राज्यों की तो चिंता लगभग समाप्त हो गई लेकिन हिंदी को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक मानने वाले लोगों की चिंताएं बढ़ गई। सरकार ने इन चिंताओं को संबोधित करते हुए वर्ष 1968 में राजभाषा संकल्प के माध्यम से त्रिभाषा फार्मूले की शुरुआत की। इसके अंतर्गत पहली भाषा मातृभाषा होगी जिसमें प्रारंभिक शिक्षा दी जाएगी। दूसरी भाषा अहिंदी भाषी लोगों के लिए हिंदी और हिंदी भाषियों के लिए आठवीं अनुसूची में शामिल कोई भी भाषा होगी। तीसरी भाषा अंतर्राष्ट्रीय भाषा यानी अंग्रेजी होगी ताकि शिक्षित भारतीय विश्व समाज से आसानी से जुड़ सकें।

लेकिन राज्यों में आपसी सहमति न होने के कारण इसे लागू नहीं किया जा सका। वर्ष 1976 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। वर्ष 1975 में गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। राजभाषा विभाग ही राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न नीति-नियमों का निर्धारण करता है तथा विभिन्न समारोहों जैसे हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी सप्ताह एवं 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन करता है।

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति की बात की जाए तो यह संविधान के भाग- 5, भाग-6, भाग-17 में विस्तृत रूप में समाहित है। भाग-17 में राजभाषा शीर्षक के अंतर्गत 4 अध्याय है। इसमें संघ की राजभाषा, राज्यों की राजभाषा, उच्चतम और उच्च न्यायालयों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष निर्देश दिए गए हैं। अगर हिंदी भाषा की वैश्विक स्थिति की बात की जाए तो यह विश्व के 150 से अधिक देशों में फैले लगभग 2 करोड़ भारतीयों द्वारा बोली जाती है। इसके अलावा 40 देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में पढाई जाती है। हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत के अलावा फिजी की भी राजभाषा है। विश्व के कई देशों जैसे :- मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद, गुयाना आदि में तो यह प्रमुख रूप से बोली जाती है। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की भी स्थापना की गई है लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ के आधिकारिक भाषा के रूप में भी हिंदी को अभी तक स्वीकृति नहीं मिल पाई है।

हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ

यदि हिंदी की एक भाषा के रूप में आकलन किया जाए तो इसके समक्ष कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती तो इसे 'राष्ट्रभाषा के रूप में की स्वीकार्यता' नहीं मिलना है। इसके अलावा हमारे समाज का एक उच्च शिक्षित वर्ग ऐसा भी है जो महत्वपूर्ण अवसरों पर हिंदी बोलने में शर्मिंदगी और हिचकिचाहट महसूस करता है

। हिंदी भारत की महज संपर्क भाषा बनकर रह गई है परंतु सच तो यह भी है कि हिन्दी सम्पूर्ण भारत के बातचीत की भी भाषा नहीं है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 41 फीसदी लोगों की ही मातृभाषा हिंदी है। इसके अलावा लगभग 75 फीसदी भारतीयों की दूसरी भाषा हिंदी है जो इसे बोल और समझ सकते हैं। राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति बहुत ही चिंतनीय है क्योंकि राजभाषा की स्थिति द्विभाषिक है और नियमों का अनुपालन बस कागजों पर हो रहा है और धरातल पर अधिकांश पत्राचार अँग्रेजी में ही किया जा रहा है।

हिंदी के सामने एक और चुनौती यह है कि यह अभी तक रोजगार की भाषा नहीं बन पाई है। देश की अधिकांश क्षेत्रीय राजनीतिक दल एवं अन्य सामाजिक संगठन भी अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए हिंदी का विरोध करते हैं। हिन्दी माध्यम से पढ़ाई-लिखाई अब विलुप्त होने के कगार पर है। गाँव से लेकर शहर तक शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी बन चुकी है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की बात बस क़ानूनों तक ही सीमित रह गई है। पहले से ही भारत में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा का माध्यम ज्यादातर अंग्रेजी ही है। आज के इस प्रतिस्पर्धी युग में अँग्रेजी ही शिक्षा का सच बन चुकी है और उसमें ही भारत के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल है यह भी एक सच है। हर माता-पिता अपने बच्चे का बेहतर भविष्य चाहते हैं। अतः वे वही भाषा चुनते हैं जिनमें उनके बच्चों का भविष्य सुंदर हों। हिंदी की हालत आज ऐसी हो चुकी है कि इसके प्रसार को बढ़ाने के लिए हिन्दी कार्यशालाओं, हिन्दी संगोष्ठियों, सम्मेलनों, सेमिनारों, समारोहों एवं कार्यक्रमों का सहारा लेना पड़ता है।

इंटरनेट, सोशल मीडिया एवं मीडिया एवं अन्य तकनीकी टूल्स के विस्तार से हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ा है तथा देश भर में इसका प्रसार तेजी से हुआ है। लेकिन सच यह भी है कि आज हिन्दी सिर्फ इंटरनेट, सोशल मीडिया,मीडिया, विज्ञापन, फिल्मों एवं केवल मनोरंजन की भाषा बनकर रह गई है। आजकल लोग हिन्दी में सोशल मीडिया पोस्ट करते हैं, रील एवं वीडियो बनाते हैं क्योंकि हिन्दी भाषा बोलने,लिखने, पढ़ने और समझने वालों की भारी तादाद है। इस प्रकार यह सिर्फ मनोरंजन एवं बाजार की भाषा बन कर रह गई है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थाओं एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी सिमट कर रह गई है और शिक्षा का माध्यम सभी जगहों पर अँग्रेजी ही है। ढेरों भाषाएँ सीखना या पढ़ना-लिखना अच्छी बात होती है लेकिन इसके साथ ही हमें अपने देश की भाषा को सहेजना और उसे उचित सम्मान देना भी जरूरी है जैसे कि दुनिया के तमाम देशों ने अपनी भाषा को अपनाकर उन्नति के नए आयाम स्थापित किए हैं।

(ओम प्रकाश खरवार)
सदस्य सचिव एवं सहायक प्रबन्धक (राजभाषा),
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

सरल होना साधारण होना नहीं है – मंगलेश डबराल

लेख

मां गंगा: भारत की संस्कृति, आस्था और अस्तित्व की अमरधारा

कार्तिकेय त्रिपाठी
कनिष्ठ कार्यकारी (विद्युत)
डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडॉर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रयागराज

भारत की धरती को पुण्यभूमि कहा जाता है, और इस पुण्य का आधार यहाँ की नदियाँ हैं। इनमें सबसे पवित्र, सबसे पूजनीय और सबसे महत्वपूर्ण स्थान है – मां गंगा का। गंगा केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति, आस्था और जीवन की अमृतमयी धारा है। हिमालय से लेकर सागर तक, यह नदी लाखों वर्षों से इस देश की चेतना को सींच रही है। यही कारण है कि गंगा को माता का दर्जा दिया गया है, क्योंकि एक माँ की तरह ही वह अपनी संतानों को जीवन देती है, पालन-पोषण करती है और अंत में मोक्ष का मार्ग भी है।

गंगा का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रंथों, वेदों, पुराणों, रामायण और महाभारत में मिलता है। पौराणिक कथा के अनुसार, गंगा स्वर्ग की नदी थी। राजा भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर वह पृथ्वी पर अवतरित हुईं, ताकि उनके पूर्वजों 60,000 सगर-पुत्रों का उद्धार हो सके। इसलिए गंगा को 'भागीरथी' भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि गंगा के जल में पवित्र डुबकी लगाने से समस्त पापों का नाश हो जाता है और मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भारत के प्रमुख तीर्थस्थल – हरिद्वार, वाराणसी (काशी), इलाहाबाद (प्रयागराज) – गंगा के तट पर ही बसे हैं। कुंभ मेला, जो विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है, गंगा के तट पर ही लगता है। लाखों श्रद्धालु यहाँ गंगा स्नान के लिए आते हैं। हर शाम वाराणसी के दशाश्वमेध घाट और हरिद्वार के हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा आरती दृश्य मात्र नहीं, बल्कि एक दिव्य अनुभव होता है। घंटों, शंखों, मंत्रों और दीपों के बीच मां गंगा की पूजा करते हुए यहाँ का वातावरण भक्तिमय हो जाता है।

गंगा केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि भारतीय जीवन की सांस्कृतिक नींव भी हैं। गंगा के तट पर अनेक कवियों, संतों, विद्वानों और कलाकारों ने जन्म लिया या साधना की। तुलसीदास जी ने यहीं श्री रामचरितमानस लिखी, कबीर और रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं में गंगा अमर है। गंगा के घाटों पर बैठकर ही सैकड़ों वर्षों से भारतीय दर्शन, संगीत और कला का विकास हुआ है।

आर्थिक दृष्टि से देखें तो गंगा का मैदानी क्षेत्र भारत का सबसे उपजाऊ क्षेत्र है। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से होकर बहने वाली गंगा और उसकी सहायक नदियाँ (यमुना, गोमती, घाघरा, गंडक, कोसी) लगभग 25 करोड़ लोगों के जीवन का आधार हैं। गंगा के पानी से गेहूं, चावल, गन्ना, दालों और सब्जियों की भरपूर फसल पैदा होती है। यह क्षेत्र भारत की कृषि की रीढ़ है। इसके अलावा, गंगा में मछली पालन, पर्यटन और नौ-परिवहन से लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। वाराणसी, कानपुर, कोलकाता, पटना जैसे बड़े शहर गंगा के किनारे ही बसे और पनपे हैं।

मां गंगा को केवल आस्था की दृष्टि से न देखकर वैज्ञानिक दृष्टि से भी समझना जरूरी है। गंगा के पानी में विशेष गुण पाए जाते हैं। 'बैक्टीरियोफेज' नामक विशेष प्रकार के वायरस गंगा के जल में पाए जाते हैं, जो हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट कर देते हैं। यही कारण है कि गंगा का पानी लंबे समय तक रखने पर भी खराब नहीं होता और उसमें स्नान करने से चर्म रोगों में लाभ होता है। अब तक के शोधों ने माना है कि गंगा के पानी में स्वयं को साफ करने की अद्भुत क्षमता है।

पर्यावरणीय दृष्टि से गंगा का मैदान भूजल स्तर बनाए रखने, जलवायु को संतुलित करने और जैव विविधता को बचाने में अहम भूमिका निभाता है। यहाँ पर गंगा डॉल्फिन, मगरमच्छ, कछुए और पक्षियों की कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो इस पारिस्थितिकी तंत्र के संकेतक हैं।

दुर्भाग्यवश, जो माँ हमें जीवन देती है, उसी के प्रति हम कृतघ्न बन गए हैं। वर्तमान समय में गंगा प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या से जूझ रही है। इसके प्रमुख कारण हैं:

1. औद्योगिक कचरा: सहारनपुर, कानपुर, उन्नाव और कोलकाता के हजारों उद्योगों से निकलने वाले रसायन, सीसा, क्रोमियम जैसे जहरीले पदार्थ सीधे गंगा में बहाए जाते हैं।

2. घरेलू गंदा पानी: तटवर्ती शहरों की सीवरेज व्यवस्था अत्यधिक दयनीय है। लाखों लीटर मल-मूत्र का पानी अनुपचारित रूप से गंगा में मिल जाता है।

3. धार्मिक गतिविधियाँ: श्रद्धा में अंधता के कारण पूजा की सामग्री, प्लास्टिक, फूल-पत्ते, और धातु के चढ़ावे बड़ी मात्रा में गंगा में डाल दिए जाते हैं। अधजले शव और नालों पर बहती अस्थियाँ भी प्रदूषण का कारण हैं।

4. जल की कमी: गंगा के जल का अत्यधिक दोहन, बांधों का निर्माण और जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इससे कई क्षेत्रों में गंगा सूखने लगी है।

इन्हीं कारणों से गंगा में 'फेकल कोलीफॉर्म' बैक्टीरिया की संख्या खतरनाक स्तर तक बढ़ गई है, जिससे जल पीने योग्य नहीं रहा और जलजीव मर रहे हैं।

गंगा की सफाई के उपाय: नमामि गंगे परियोजना

गंगा को बचाने के लिए भारत सरकार ने 2014 में 'नमामि गंगे' (Namami Gange Project) नामक एक एकीकृत संरक्षण मिशन शुरू किया।

• सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाकर गंदे पानी का शोधन करना।
• औद्योगिक प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए कठोर नियम बनाना।
• तटीय क्षेत्रों में 'घाटों' का विकास करना और 'रिवर फ्रंट' बनाना।
• ग्रामीणों को जागरूक करना और जैव-विविधता संरक्षण पर जोर देना।

इस परियोजना से कुछ हद तक राहत मिली है, लेकिन अभी पूर्ण सफाई बहुत दूर है। यह एक निरंतर चलने वाला जन-आंदोलन है। मां गंगा को केवल मंत्रों से नहीं, बल्कि कर्मों से भी पवित्र किया जा सकता है। हम सबको अपने दैनिक जीवन में निम्नलिखित प्रयास करने चाहिए:

• नदियों में कूड़ा-कचरा न डालें।
• प्लास्टिक का उपयोग करने से बचें।
• आस-पास के लोगों को नदी-संरक्षण के लिए जागरूक करें।
• सरकारी प्रयासों में सहयोग दें और नमामि गंगे अभियान का हिस्सा बनें।

मां गंगा कोई साधारण नदी नहीं है। वह इस देश की जीवन-रेखा है, हमारी आस्था का केन्द्र है और आने वाली पीढ़ियों की धरोहर है। उसे प्रदूषित होते देखना, हमारी ही संस्कृति और भविष्य को मिट्टी में मिलाने जैसा है। हम सभी को यह समझना होगा कि गंगा को बचाना, केवल सरकार या प्रशासन का काम नहीं, बल्कि हर भारतीय का कर्तव्य है। एक सच्ची संतान होने के नाते, हमारा यह दायित्व है कि हम मां गंगा के स्वच्छ, निर्मल और अविरल प्रवाह को बनाए रखें, ताकि यह अमरधारा सदियों तक यूं ही बहती रहे – पापों का नाश करती, जीवन का वरदान देती, और हमें मोक्ष की ओर ले जाती। जय गंगा मैया!

कविता

ज्योति गुप्ता
वरिष्ठ कार्यकारी/विद्युत
डी.एफ.सी.सी.आई.एल., प्रयागराज
मोबाइल नंबर: 8953957398
ईमेल: jyotigupta@dfcc.co.in

वो जो खुद को गढ़ती है

वो किसी परिचय की मोहताज नहीं,
उसकी पहचान उसके कदमों से बनती है।
हर सुबह जब सूरज उगता है,
वो अपने सपनों की राह खुद चुनती है।
कभी रसोई की महक में मुस्कुराती है,
कभी दफ़्तर की फाइलों में खो जाती है।
दुनिया उसे जिम्मेदारियों के तराज़ू में तौलती है,
पर वो अपने हौसलों से नई पहचान बनाती है।
थकान उसके दरवाज़े तक आती है,
पर उसके इरादों को छू नहीं पाती।
क्योंकि उसने सीख लिया है,
रुकना नहीं, बस आगे बढ़ते जाना।
कभी आँधियों से लड़ती है,
कभी हालात से समझौता करती है।
पर हर गिरावट के बाद भी
वो फिर से खड़ी होना जानती है।
वो किसी से आगे निकलने की होड़ में नहीं,
न ही पीछे रह जाने का डर रखती है।
वो अपने कर्मों की रोशनी से
हर दिन खुद की राह लिखती है।
वो एक कहानी है संघर्ष की,
एक मिसाल है साहस और विश्वास की।
वो सिर्फ़ एक महिला नहीं,
वो हर दिन खुद को गढ़ती हुई पहचान है।

राजेश कुमार
उप महाप्रबंधक (सिविल)
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

माँ

माँ, तुम्हारे लिए कैसे कविता
लिखूँ ,
कितना कुछ है बताने को पर
शब्द नहीं सूझता ।।
क्या मिसालें दूँ, किससे तुलना
करूँ ।
कोई उपमा तुम्हारे तुली नहीं
दिखता ।।
माँ, अब तुम नहीं हो,
सब कुछ तो है, पर कुछ खास
खो जाने का,
एहसास बहुत खलता है ।
तुम्हारे हाथों से बने कुछ खाने
जैसा,
कहीं कुछ नहीं मिलता ।
कभी कुछ सुस्वाद जो मिल जाए
खाने को,
तो बरबस तुम्हारे खाने की ही
याद दिलाता ।।
तुम घर से खाली पेट कभी जाने
कहाँ देती थी,
पेट भर गया है, बोलने पर भी
एक-दो रोटियाँ और धर देती थी
।
सर्दी, गर्मी, बरसात हर मौसम में
फिक्र करती थी,
वो ममता, वो दुलार शब्दों में
नहीं;
हर छोटी बड़ी देखभाल में बयां
करती थी ।।
अब कभी बीमार जो होता हूँ,
वो तुम्हारे हाथों से बने घरेलू
नुस्खे,
और वो सिर पर ममता भरी
हाथों की तेल मालिश कहाँ
पाता हूँ ।
माँ, तो किसी और के जानने से
पहले से जानती है ।
संसार में आकर पालने से भी
पहले कोख में पालती है ।।
याद रखने की उम्र तक आने के
पहले बच्चे के ।
कितनी तकलीफें सहती है,
कितना कुछ कर गुजरती है ।।
माँ, अब जो कभी पीछे मुड़कर
देखता हूँ ।
कि कैसे बदलती रही उम्र के
साथ प्राथमिकताएँ ।।
बचपन की मौज, फिर पढ़ाई का
बोझ,
अव्वल आने की वो होड़, फिर
नौकरी पाने की दौड़ ।।
शादी, बच्चे फिर वो अपनी
गृहस्थी की भाग-दौड़ ।।
पर इन सब में तुम घर परिवार को
संभाले थी खड़ी ।
जहाज के लंगर की भांति अपनी
जगह पर अडिग अड़ी ।
पति और बच्चे ही जिसकी
प्राथमिकता रहे हर घड़ी ।।
माँ, वो बचपना जो माँ के किसी
कोने में हमेशा रहा करता था ।
तुम्हारे जाने के बाद फिर वो
कभी दिखा नहीं ।।
सच में, तुम्हारे जाने के बाद,
बच्चे होने का अहसास दिलाए ।
ऐसा कोई बचा नहीं ।
सही कहते हैं, इस संसार में माँ से
कोई बड़ा नहीं ।
माँ से कोई बड़

माँ-परिधि से परे

जिसमें भरी हुई ममता है,
वो अपनी प्यारी मम्मा है।
अनगिनत रखती क्षमता है,
वो अपनी प्यारी ममता है॥
गोद में जिसकी जन्नत है,
आँचल भी जिसका सच्चा है।
जो इनको लिखना चाहेंगे,
उनका शबदबोध कच्चा है॥
माँ-सम्मान, दिल से पूजा,
जिससे मिलने का रास्ता है,
वो अपनी प्यारी मम्मा हैं।
माँ जननी ना जीव मात्र की,
भाषा, वेश, व्याकरण देतीं।
अपने उदार से जन्मे का भी,
देश हित में जान भी लेतीं॥
इनको जीव कहें या दैविक,
भेद करने में अक्षम है,
वो अपनी प्यारी मम्मा हैं॥
मिलों दूर जहाज उड़ाकर,
देश दुनिया में नाम कमाकर।
धरती ही ना दूर गगन में भी,
अपना पैर जमाकर॥
अपनी पीड़ा के संग जिसको
दुनिया का दुख हरण है,
वो अपनी प्यारी मम्मा हैं॥
दुनिया का धन वैभव सारा,
नाम, प्रतिष्ठा, सुख-विलास।
कोई भी ना छोड़ पाता,
चाहे कर ले लाख प्रयास॥
संतानों की खातिर जिसने,
इन सबको ठोकर मारा है,
वो अपनी प्यारी मम्मा हैं॥
माँ पानी पर आग हैं पापा,
दोनों से पर जीवन आता।
एक कहते आगे बढ़ना है,
दूजा कहे ऊंचाई पाना॥
माँ के ना होने पर पापा,
अर्धनारीश्वर सा अम्मा हैं।
वो अपनी प्यारी मम्मा हैं॥
माँ की ममता की अनुरूपता,
सारे जीव में मिल जाती है।
देश-काल के भेद में पल कर,
भी ना काभी बदल पाती है॥
'अजीर' की कोशिश जिस
शाश्वत को,
शब्दों में कुछ कह पाना है,
वो अपनी प्यारी मम्मा हैं॥

श्री रणधीर सिंह,
प्रबंधक (एटीएम),
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

राजभाषा नियम, 1976

जानिए सरल शब्दों में

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 के अंतर्गत राजभाषा संबंधी प्रावधानों को लागू करने हेतु कानून बनाने की शक्ति केंद्र सरकार के पास है। अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों को लागू करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा राजभाषा नियम, 1976 (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) बनाया गया। इसे 17 जुलाई, 1976 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया।

- **नियम- 1: यह तमिलनाडु राज्य को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में लागू होगा।**
- **नियम-2 (परिभाषा) : हिन्दी भाषा के प्रत्याशित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों यथा : क, ख, ग में विभाजित किया गया है।**
- **नियम-3 : राज्यों आदि और केंद्र सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्राचार।**
- **नियम-4: केंद्र सरकार के कार्यालयों बीच पत्राचार।**
- **नियम-5: हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएंगे।**
- **नियम-6: राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) में वर्णित सभी दस्तावेज़ द्विभाषी रूप में जारी किए जाएंगे।**
- **नियम-7: कोई भी कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अँग्रेजी में कर सकता है।**
- **नियम-8: कोई भी कर्मचारी किसी फ़ाइल पर टिप्पणी या कार्यवृत्त हिंदी या अँग्रेजी में लिख सकता है। उससे दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं मांगा जा सकता है।**
- **नियम-9: कर्मचारियों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त करने से संबंधित है।**

हिन्दी में प्रवीणता की परिभाषा

1. यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक या उसके समकक्ष या उच्चतर परीक्षा हिन्दी माध्यम से पास की हो।

अथवा/

2. स्नातक या समकक्ष या उच्चतर किसी परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो।

अथवा/

3. वह स्वयं यह घोषणा कर दे कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है।

- नियम-10(1): कर्मचारियों के हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करने से संबंधित है। .

➢ **नियम-10(4): किसी कार्यालय के 80 प्रतिशत कर्मचारियों द्वारा हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लेने पर उस कार्यालय का नाम राजपत्र में अधिसूचित कराया जाना।**

हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान की परिभाषा

1) यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक या उसके समकक्ष या उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ पास की हो।

अथवा

2) उसने प्राज्ञ या अन्य निर्धारित परीक्षा पास की हो।

अथवा

3) केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित कोई परीक्षा पास की हो

अथवा

4) वह स्वयं घोषणा कर दे कि उसे हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

➢ **नियम-11: मैनुअल, संहिता, लेखन सामग्री, नेमप्लेट, मुहर आदि का द्विभाषी रूप में प्रकाशित की जाएंगी।**

➢ **नियम-12: राजभाषा अधिनियम, नियम एवं उप-नियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराना कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख की ज़िम्मेदारी है ताकि नियमों के अनुपालन हेतु ठीक और प्रभावकारी जांच बिन्दु तैयार किए जा सकें।**

भारत का भाषायी वर्गीकरण

राजभाषा नियम, 1976 के प्रावधानों के अनुरूप भारत सरकार द्वारा हिन्दी पढ़ने-लिखने एवं बोलने-समझने के आधार पर भारत को निम्नलिखित 3 भाषायी वर्गों में विभाजित किया गया है। इसी भाषायी वर्गीकारण के आधार पर ही सम्पूर्ण भारत में राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन किया जाता है।

क्षेत्र "क" /Region "A"	क्षेत्र "ख" /Region "B"	क्षेत्र "ग" /Region "C"
बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश और दिल्ली तथा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह।	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब और चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र	जम्मू एण्ड कश्मीर,सिक्किम, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल तथा क्षेत्र (क) और (ख) में निर्दिष्ट के अलावा अन्य सभी

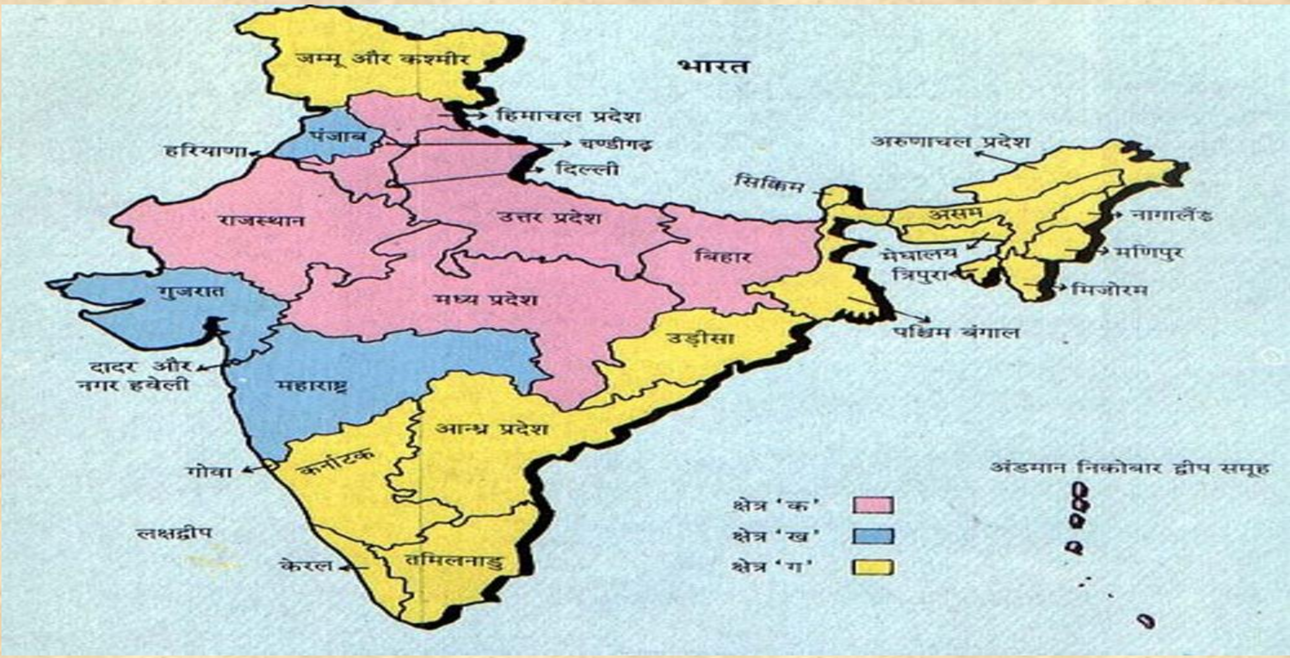

राजभाषा नियम, 1976 की उपयोगिता

राजभाषा नियम 1976 भारत सरकार के कार्यालयों दैनिक सरकारी कामकाज में सूझबूझ एवं समझ के साथ हिन्दी एवं अंग्रेज़ी के सुव्यवस्थित तथा सही प्रयोग करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं। इन नियमों का मुख्य उद्देश्य सरकारी कार्यों में हिन्दी का क्रमिक विकास और उसका प्रभावी प्रयोग सुनिश्चित करना है। इसकी उपयोगिता निम्न प्रकार से समझी जा सकती है :-

1. सरकारी कार्यों में एकरूपता

राजभाषा नियम 1976 सभी मंत्रालयों, विभागों एवं सरकारी कार्यालयों में भाषा प्रयोग के लिए समान दिशा-निर्देश प्रदान करता है इससे सरकारी पत्राचार और कार्यप्रणाली में एकरूपता बनी रहती है।

2. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायता

इन नियमों के माध्यम से सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलता है। इससे हिन्दी का विकास तथा उसका व्यावहारिक उपयोग बढ़ता है।

3. प्रशासनिक कार्यों में सरलता

जब कार्यालयों में निर्धारित राजभाषा नियमों का पालन होता है, तो कर्मचारियों को कार्य करने में सुविधा होती है और कार्य अधिक व्यवस्थित एवं सरल ढंग से संपन्न होते हैं।

4. जनता और सरकार के बीच बेहतर संवाद

हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जनता को सरकारी सूचनाएँ, पत्र एवं योजनाएँ हिन्दी में उपलब्ध होने से वे उन्हें आसानी से समझ पाते हैं। इससे प्रशासन अधिक जनहितकारी बनता है।

5. क्षेत्रवार भाषा व्यवस्था

राजभाषा नियम 1976 में भारत को 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इससे विभिन्न राज्यों की भाषाई परिस्थितियों के अनुसार हिन्दी एवं अंग्रेज़ी के प्रयोग का निर्धारण किया जाता है।

6. कर्मचारियों में हिन्दी कार्यकुशलता का विकास

इन नियमों के कारण सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी सीखने, हिन्दी टाइपिंग तथा हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरणा मिलती है। इससे उनकी राजभाषा संबंधी दक्षता बढ़ती है।

7. संवैधानिक प्रावधानों का पालन

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान दिए गए हैं। राजभाषा नियम 1976 इन संवैधानिक उद्देश्यों को व्यवहार में लागू करने का माध्यम हैं।

8. कार्यालयी कार्यों का द्विभाषिक स्वरूप

महत्वपूर्ण दस्तावेज़, फॉर्म, नामपट्ट, मुहरें, पत्र आदि हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में तैयार किए जाते हैं। इससे सभी वर्गों के लोगों को सुविधा मिलती है।

निष्कर्ष

राजभाषा नियम 1976 सिर्फ भाषा संबंधी नियम नहीं हैं बल्कि यह प्रशासन को अधिक सरल, प्रभावी और जन सुलभ बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। राजभाषा नियम हिन्दी के विकास के साथ-साथ देश के भाषाई एकता की भावना को भी मजबूत करता है।

(ओम प्रकाश खरवार)
सदस्य सचिव एवं सहायक प्रबन्धक (राजभाषा),
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

"मुट्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं - महात्मा गांधी "

योगासन से वजन घटाएँ और स्वस्थ रहें

आज की तेज बदलती दुनिया में खुद को फिट और दुरुस्त रखना एक चैलेंज है। जब आप स्वस्थ होंगे , तभी आप अपना काम ठीक तरीके से कर पाएंगें और अपने परिवार का भी ख्याल रख पाएंगे। आज की इस भागदौड़ भरी ज़िंदगी में लोगों के पास खुद का ध्यान रखने के लिए भी समय कम पड़ रहा है। आधुनिकता के इस दौर में लोगों के खानपान एवं जीवन शैली में भी काफी बदलाव हुआ है। ऐसे में खुद को फिट एवं स्वस्थ रखना मुश्किल है।

योग के माध्यम से हम खुद को स्वस्थ, फिट एवं मजबूत रख सकते हैं। योग के जरिये हम अपने मन एवं दिमाग को सुंदर तथा एकाग्र रख सकते हैं। नियमित योग का अभ्यास कर हम कई बीमारियों से काफी हद तक दूर रह सकते हैं। योग की सबसे खास बात यह है कि शरीर के हर हिस्से के लिए कोई न कोई योग अभ्यास है।

योग प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा पद्धति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज यह पूरी दुनिया में प्रचलित है और योग अभ्यास के जरिये हम कई छोटी-छोटी बीमारियों एवं अन्य समस्याओं से स्वयं को दूर रख सकते हैं। अतः योग अभ्यास के द्वारा हम अपने मन को शांतचित्त, दिमाग को दुरुस्त एवं सम्पूर्ण शरीर को फिट रख सकते हैं।

आधुनिक समय में हम सभी के रहन-सहन, खान-पान एवं काम करने के तरीके सहित सम्पूर्ण जीवन शैली में काफी परिवर्तन हुआ है जिससे लोगों में मोटापा यानि वजन बढ़ना, घबराहट, टेंशन एवं शारीरिक समस्याएँ तेजी से बढ़ी हैं। हम अपने वजन पर नियंत्रण कैसे रखें या कौन सा योग अभ्यास कर हम अपने वजन पर कंट्रोल रख खुद को फिट रख रखते हैं। ऐसे कई योगासन है जिसे हम नियमित रूप से करके वजन पर नियंत्रण रख सकते हैं।

वैसे तो वज़न घटाने के लिए कई योगासन हैं, लेकिन आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि इसके साथ निरंतरता बनाए रखनी जरूरी होती है। इसके साथ ही, अगर आप पहली बार योग कर रहे हैं तो धीरे-धीरे इसमें आगे बढ़े और आरामदेह आसनों के साथ संतुलन बनाते हुए लगातार अभ्यास करते रहें. वजन घटाने में निम्नलिखित योग अभ्यास मददगार साबित हो सकते हैं :-

1. वजन कम करने के लिए योगासन – भुजंगासन

इसके नाम से ही पता चलता है कि जो आसन आप करनेवाले हैं वह भुजंग यानी सांप की मुद्रा की तरह है. यह आसन आपके ऊपरी शरीर को टोन करने में मदद करता है और पेट की मांसपेशियों पर भी काम करता

है, जिससे पेट की वसा कम करने में मदद मिलती है साथ ही यह वज़न कम करने में काफ़ी मददगार साबित होता है. गर्भवती महिलाएं या किसी तरह की इंजरीज़ हो, तो इस व्यायाम करने से बचें.

2. वजन कम करने के लिए योगासन – त्रिकोणासन

यह तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करता है, और सीने तथा कंधे की मांसपेशियों को खोलता है. रीढ़ की हड्डी, पेट की मांसपेशियों, जांघ की मांसपेशियों और श्रोणि स्नायुबंधन को मज़बूत और लचीला बनाने के लिए इस क्लासिक आसन के बारे में विचार किया जा सकता है. यह अपच, गैस्ट्राइटिस (गैस की समस्या), एसिडिटी और पेट फूलने की समस्या से भी राहत दिलाता है।

3. वजन कम करने के लिए योगासन - गोमुखासन

शरीर को आराम प्रदान करने करने के लिए इस आसन का अभ्यास करना अच्छा विकल्प है. यह मुद्रा पीठ दर्द, तनाव, थकान और चिंता को कम करती है और आपकी जांघों, टखनों, कंधों, डेल्टोइड्स और छाती को मज़बूती प्रदान करती है. इसके रोज़ाना अभ्यास से आप पेट की चर्बी को कम कर सकते हैं।

4. वजन कम करने के लिए योगासन - नौकासन

पीछे की ओर झुककर किया जाने वाला यह आसन आपके शरीर को बाहर की ओर मोड़ता है, सीने का विस्तार करता है और सांस सांस लेने की क्रिया को प्रोत्साहित करता है. यह विशेष मुद्रा आपके अंगों को टोन करने और नर्वस टेंशन को कम करने के अलावा शरीर में रक्तसंचार, मांसपेशियों, पाचन और हार्मोनल सिस्टम को उत्तेजित करता है. इस आसन को वज़न कम करने के लिए भी जाना जाता है. इस आसान से आसन का अभ्यास रोज़ाना करें।

5. वजन कम करने के लिए योगासन - सेतु बंध सर्वांगासन

हालांकि इसे एक बैकबेंड आसन के रूप में वर्गीकृत किया गया है, लेकिन यह तकनीकी रूप से एक एसेसमेंट पोज़ है. इसे यदि सही ढंग से किया जाए तो यह आपकी पीठ, ग्लूटस मसल्स, पैरों और टखनों को मज़बूत करता है। यह गर्दन, कंधे, छाती और रीढ़ को भी लचीला बनाता है और यह तनाव तथा अवसाद के सामान्य लक्षणों को कम करने के साथ वज़न कम करने में मददगार साबित होता है।

6. वजन कम करने के लिए योगासन - मत्स्यासन

मछली की मुद्रा वाला यह आसन रक्तसंचार में सुधार करके और फेफड़ों मज़बूत बनाकर ऑक्सीजन के प्रवाह को बेहतर बनाने में मदद करता है. यह सांस से संबंधित विकारों से राहत देता है, गर्दन और ऊपरी पीठ की मांसपेशियों को फैलाता है, पेट की मांसपेशियों को उत्तेजित करता है और पाचन में सुधार करता है।

7. वजन कम करने के लिए योगासन - चतुरंग दंडासन

यह आसन शरीर के ऊपरी हिस्से, ख़ासकर बाइसेप्स और ट्राइसेप्स के लिए बेहतरीन काम करता है. इस आसन को करते समय, आपको अपने शरीर के वज़न को अपने हाथों पर उठाना होता है. हालांकि इसमें कई मुद्राएं होती हैं, इसलिए इसे एक योग मास्टर की मदद से ही सही ढंग से किया जा सकता है।

फ़ोटो क्रेडिट : शटरस्टॉक

हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है – महात्मा गांधी

पुस्तक समीक्षा

मार्जिनलैंड्स - कगार पर भारतीय परिदृश्य - आरती कुमार - राव

(Marginlands - Indian Landscapes on the brink)

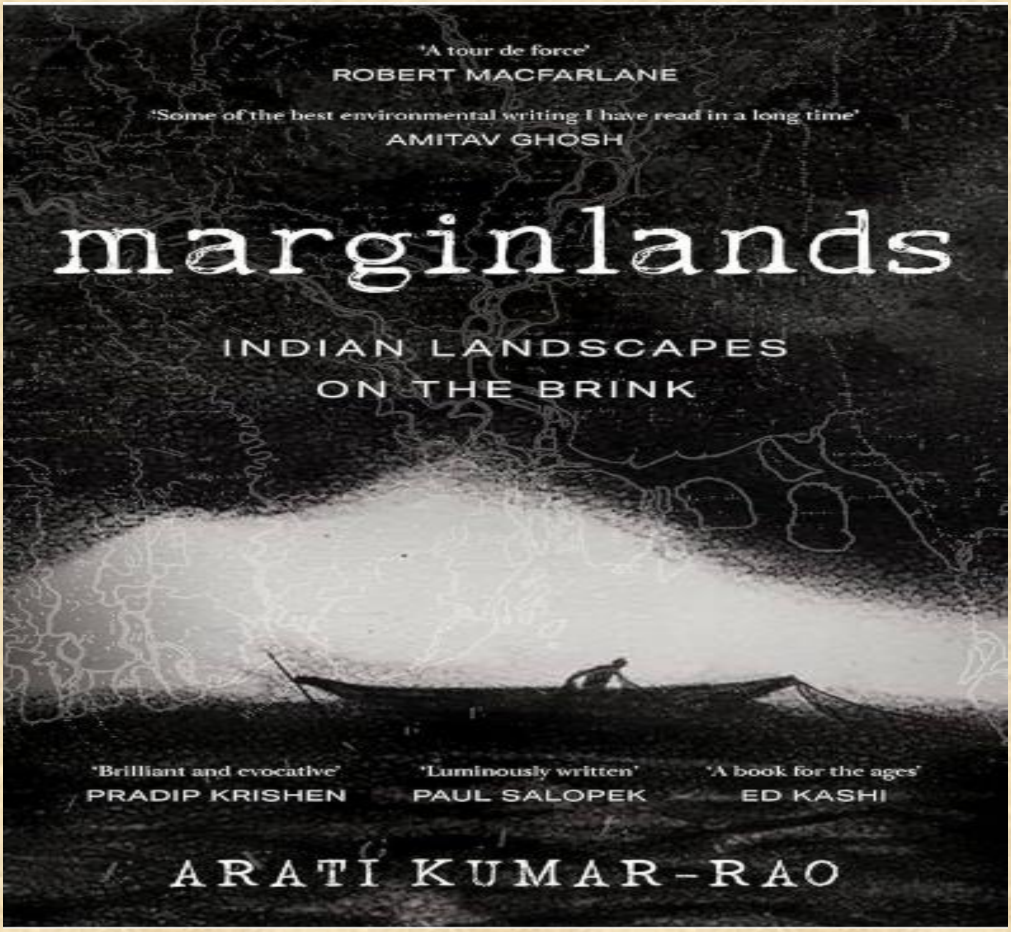

प्रस्तावना हमें लेखक के बचपन की एक झलक देती है - प्रकृति और किताबों और सभी प्रकार की बहसों से घिरा हुआ और एक पिता जो थर्मल पावर प्लांट में काम करने के बावजूद कम से कम आधी सदी पहले अक्षय ऊर्जा स्रोतों की प्रभावकारिता के बारे में आश्वस्त थे, उसने लेखक को पारिस्थितिक मुद्दों को जनता तक पहुंचाने के लिए संचार के महत्व की सीख दी। वे तब भी उसके दिमाग में बने रहे जब वह उच्च अध्ययन के लिए गई और बाद में जब अपने कॉर्पोरेट जीवन में। अपने स्थिर कॉर्पोरेट जीवन को छोड़ने और पर्यावरणीय कहानी कहने में उद्यम करने की यात्रा भी बहुत प्रेरणादायक है।

लेखक ने ठीक ही कहा है कि पुस्तक में लगभग हर बात एक उदाहरण है, गुमराह करने वाले निर्णयों का, चेतावनियों को जानबूझकर अनदेखा किए जाने का, सबूतों की अवहेलना किए जाने का, नतीजतन अनिवार्य रूप से आसन्न या

वर्तमान में आपदाओं को उजागर करने का मार्ग प्रशस्त करता है जो शायद कभी खबर नहीं बना सकते हैं।

लेखक हालांकि प्रस्तावना को एक सकारात्मक नोट पर समाप्त करती हैं, जिसमें उनका विश्वास है कि भूमि कि आवाज़ को सुनने और उस सुनने के कारण सही करने की प्राचीन प्रथा को अभी भी पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

भाग 1 – रेगिस्तान (The Desert) के अध्याय "*एक तरल याद" (A liquid Memory*) में, लेखक ने नायक छत्तर सिंह के माध्यम से रेगिस्तान में जीवित रहने की कला की व्याख्या की है, जहां प्रत्येक गांव के जीवन को पानी के आसपास योजनाबद्ध किया जाता है। जब यह कार्य सही तरीके से किया जाता है, तो प्रत्येक गांव में तीन प्रकार के पानी तक पहुंच होगी - "पालर पानी", जलग्रहण पर बारिश से संचयन किया गया सतही जल; "रेजवानी पानी", "बेरिस" द्वारा छिद्रित या केशिका जल; और "पाटली पानी", कुओं द्वारा पहुँची गहरे पानी की मेज। कब कौन सा पानी उपयोग किया जाता है यह एक प्राकृतिक चक्र द्वारा नियंत्रित होता है।

इस अध्याय में इस बात पर चर्चा की गई है कि केरल (जो क्षेत्रफल में जैसलमेर जिले से भी छोटा है) में 3000 मिलीमीटर औसत वर्षा की तुलना में केवल 80-100 मिलीमीटर वर्षा होने के बावजूद लोग हमारे नायक जैसे लोगों द्वारा बोली जाने वाली भूमि की पारंपरिक भाषा का उपयोग और सम्मान करके जीवित रहते हैं और फलते-फूलते हैं।

अध्याय "*नुकसान का परिदृश्य*" (*The Landscape of loss*) चर्चा करता है कि रेगिस्तान की जीवित भाषा को विशेष रूप से कहीं भी सार्वभौमिक, सैद्धांतिक ज्ञान के साथ कैसे बदल दिया गया है। हम सभी उस दर्द को महसूस कर सकते हैं, एक युग के गुजरने का दुःख, जब नायक, चतर सिंह (थार रेगिस्तान का जीवित विश्वकोश) विलाप करता है कि उसके तीन बेटों में से कोई भी रेगिस्तान की जीवित भाषा (इसके भूगोल, जीव विज्ञान, प्राणी विज्ञान, जल विज्ञान, भू-आकृति विज्ञान और नृविज्ञान) नहीं बोलता है। जब हम एक विचारोत्तेजक शब्दकोश खो देते हैं, जब हम जैविक शब्दों और उनके आयात को भूल जाते हैं - भूमि अपने रक्षकों, इसके सबसे भावुक अधिवक्ताओं को खोने का जोखिम उठाती है। इस भूलने का मतलब है कि गहरी थार को अब "बंजर भूमि" के रूप में चिन्हित कर दिया गया है और इसे एक "संसाधन" घोषित किया गया है, जो बिक्री के लिए एक वस्तु है, उन लोगों द्वारा जो इससे परिचित नहीं हैं। इस अध्याय में रेखांकित कारणों को समझे बिना सद्भावपूर्वक किए गए कार्यों के अनपेक्षित परिणामों की चर्चा की गई है। निचले हिमालय में चूना पत्थर के उत्खनन के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट के फैसले के परिणामस्वरूप जैसलमेर में, जिसे "बंजर भूमि" माना जाता था, खुले खनन का काम हुआ, । खनन ने पारंपरिक जल प्रणाली को खत्म कर दिया, जिससे लोग सरकार के पाइप वाले पानी पर निर्भर हो गए।

इंदिरा गांधी नहर परियोजना के दुष्प्रभावों और इस क्षेत्र में "आयातित" वृक्षों के रोपण पर भी चर्चा की गई है।

अध्याय के अंतिम भाग में पवन चक्कियों के प्रभाव पर चर्चा की गई है – कैसे ग्रिफ़ॉन गिद्धों को पावन चक्कियों के पंखे अपनी ओर खींच लेते हैं; भारत-पाकिस्तान सीमा के पास की सड़कों पर - जिसने उच्च भूमि से पानी के प्रवाह को प्रभावित किया और लेखक ने अंत में यह अफसोस जताया कि अधिकारी चीजों को थोपने के बजाय, स्थानीय लोगों की मदद करने के लिए, उनके जीवित ज्ञान का उपयोग क्यों नहीं कर सकते।

भाग 2 – हमारी भूमि कि नसें (Veins of Our Land) के अध्याय *"गंगा के बदलते आलिंगन में"* (*In the shifting embrace of the ganga*) गंगा की स्थिति और पश्चिम बंगाल राज्य में इसके प्रभाव पर चर्चा की गई है। ऐतिहासिक रूप से मानसून हर बार गंगा को उफान पर ला देती थी और वार्षिक बाढ़ एक स्वागत योग्य घटना होती थी, जिससे हिमालय के पहाड़ों से महीन गाद नीचे आए और इसे दुनिया की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि, मैदानी इलाकों में जमा कर दे। गंगा के जल प्रवाह में परिवर्तन के कारण विभिन्न शहरों के उत्थान और पतन पर चर्चा की गई है। साल में दो बार कटाव के कारण गंगा के कारण भूमि के नुकसान के कारण राजमहल, माणिकचक, पंचनादपुर, सरगांव आदि शहरों का भाग्य वर्षों में कैसे बदल गया, इस पर विस्तार से चर्चा की गई है। फरक्का बैराज (पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में) की कहानी, मूल रूप से 1853 में आर्थर थॉमस कॉटन द्वारा कल्पना की गई थी, 1957 में भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा पुनर्जीवित की गई और आखिरकार 1971 में इसका निर्माण किया गया और जिन मुद्दों को संबोधित करने के लिए इसे बनाया गया था और जो नई समस्याएँ इसके कारण आयीं (जिनके बारे में सोचा नहीं गया था) पर वास्तव में विस्तार से चर्चा की गई है।

फरक्का बैराज से सबसे अधिक प्रभावित मालदा जिला है क्योंकि यह बैराज, गंगा के प्राकृतिक मार्ग को बाधित करता है और सभी तलछट/गाद के परिवहन को अवरुद्ध करता है। फरक्का बैराज के कारण गंगा के मूल मार्ग में बदलाव के कारण बने बड़े सैंडबार पर रहने वाले लोगों की स्थिति पर भी चर्चा की जाती है क्योंकि झारखंड और पश्चिम बंगाल दोनों भूमि पर दावा करते हैं लेकिन लोगों पर नहीं।

अध्याय "ए फ्लीटिंग फ्लैश ऑफ फिन" (*A Fleeting Flash of Fin*) में लेखक ने सिंधु डॉल्फ़िन की खोज पर चर्चा की है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले मीठे पानी की डॉल्फ़िन की दो उप-प्रजातियों में से एक है, दूसरी गंगा डॉल्फ़िन है। वे लगभग अंधे हैं, करीबन लुप्तप्राय हैं और अस्तित्व के लिए इकोलोकेशन पर निर्भर हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से बैराज और बांधों के आने के बाद डॉल्फ़िन रेंज लगभग 80 प्रतिशत कम हो गई। ब्यास में भी, इन नदी डॉल्फ़िन का अस्तित्व अनिश्चित है, जिसका कारण गहरे पानी की अनुपलब्धता के साथ अपस्ट्रीम डायवर्जन और बांधों द्वारा अवरोधन है।

लेखक ने बिहार के भागलपुर के पास गंगा में गंगा डॉल्फ़िन के बारे में इसी तरह की स्थिति देखी। अध्याय में भारत सरकार द्वारा 2016 में पारित राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम के संभावित प्रभाव पर चर्चा की

गई है जिसमें ड्रेजिंग, अधिक बांधों और यातायात का निर्माण शामिल है; वह सब कुछ जो व्यावहारिक रूप से अंधे गंगा डॉल्फ़िन पर मौत की घंटी बजाएगा, जिनके लिए ध्वनि ही सब कुछ है। भारतीय प्रधान मंत्री ने 15 अगस्त 2020 को प्रोजेक्ट डॉल्फिन लॉन्च किया और लेखक को लगता है कि बिना बात ही मछुआरों को दोषी ठहराया जा रहा है, लेकिन नदी के घटते प्रवाह और विनाशकारी जलमार्गों के वास्तविक मुद्दे का नाम भी नहीं लिया गया है। लेखक हमें चीन से सीखने के लिए भी प्रोत्साहित करता है जहां औद्योगिकीकरण और पनबिजली और परिवहन के लिए नदी के भारी उपयोग के परिणामस्वरूप अंततः "बाईजी", डॉल्फिन प्रजाति जो "यांग्त्ज़ी की देवी" के रूप में जाना जाता है, सदा के लिए लुप्त हो गयी।

अध्याय "डॉल्फ़िन के साथ शिकार" **(*Hunting with Dolphins*)** असम में शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र में गंगा डॉल्फ़िन के साथ मछली पकड़ने वाले हार्पून मछुआरे के साथ लेखक के अनुभव को साझा करता है। हालांकि डॉल्फ़िन की तरह ये मछुआरे एक मरती हुई नस्ल हैं, ब्रह्मपुत्र में मछली की आबादी कुछ स्थानों पर 80-85 प्रतिशत तक घट गई है और स्वदेशी मछली की कई छोटी प्रजातियां संभवतः हमेशा के लिए खो गई हैं।

लेखिका ऊपरी असम में अपने अनुभव के बारे में भी लिखती हैं जहां चट्टानों और बोल्डर के लिए धाराओं और नदियों के खनन ने महत्वपूर्ण मछली प्रजनन आवासों को नष्ट कर दिया है। नतीजा यह है कि शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र के तट पर बसे अधिकांश शहरों में खपत की जाने वाली 90 प्रतिशत मछली आंध्र प्रदेश के खेतों से बर्फ के तल पर ट्रक से लाई जाती है।

लेखक को ढाका के दक्षिण-पश्चिम में एक नदी पर समान अनुभव था, मछली की अपर्याप्तता, डॉल्फ़िन और मछुआरे दोनों के लिए स्पष्ट था।

अध्याय "फ़ेडिंग टू ब्लैक" **(*Fading To Black*)** हमें अगस्त 1950 में असम में आए 8.7 तीव्रता के भूकंप और ब्रह्मपुत्र पर इसके प्रभाव के बारे में बताता है। भूकंपीय उथल-पुथल से उत्तेजित, ब्रह्मपुत्र एक जीव में बदल गया, जो घातक, अप्रत्याशित, अदम्य था। लेखक बाढ़ को नियंत्रित करने के तरीकों के रूप में डाइक, पुनरीक्षण और तटबंधों के दुष्प्रभावों पर चर्चा करता है। पहाड़ों और नदी के तल से चट्टानों का खनन जिसके परिणामस्वरूप नदियाँ जो कभी उपजाऊ गाद ले जाती थीं और अब एक नया अवांछनीय भार, रेत ले जाती हैं, पर भी चर्चा की जाती है। अध्याय के अंत में, लेखक राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन द्वारा वित्त पोषित एक नाव क्लिनिक पर अपने अनुभव पर चर्चा करती है और ब्रह्मपुत्र के पूर्वी इलाकों में चपोरियों (सैंडबार) पर दूरदराज के गांवों पर इसके सकारात्मक प्रभाव के बारे में हमें बताती हैं।

भाग 3 – **क्षीण होता अंतर (An Eroding Margin)** के अध्याय "*नमकीन के कगार पर*" (*On the brink of brine)* में, लेखक ने दुनिया के सबसे बड़े अखंड मैंग्रोव वन, गहरे सुंदरबन का अपना अनुभव साझा किया है। मैंग्रोव भूमि पुनर्ग्रहण और बिल्डर दोनों हैं और बंगाल की चक्रवात प्रवण खाड़ी के

खिलाफ तटीय रक्षा का निर्माण करते हैं। लेखक बांग्लादेशी मछुआरों के साथ गए थे, जो हिल्सा (सभी बंगालियों के लिए शुभ मछली) मछली पकड़ने गए थे, जिसे "पोद्दा नोदिर इलिश" या 'पद्मा नदी से हिल्सा', बांग्लादेश की राष्ट्रीय मछली के रूप में जाना जाता है। फरक्का बैराज के बनने से हिल्सा की उपलब्धता में भारी कमी आई है, जिसने हिल्सा जैसी एनाड्रोमस मछलियों के नदी के ऊपर प्रवास को रोक दिया है। इस अध्याय में सामान्य जलमार्ग में बढ़ते हुए गाद के कारण, सुंदरबन में तेल टैंकरों और मालवाहक जहाजों की आवाजाही में महत्वपूर्ण उछाल की चर्चा की गयी है, जिसके कारण कोयला, फ्लाई-ऐश, तेल ले जाने वाले जहाजों से जुड़ी कई दुर्घटनाएं दर्ज हुई हैं।

अध्याय *"समुद्र के किनारे ज्वेल्स"*, *(Jewels by the sea)* में, लेखक गोवा और मुंबई के समुद्र तटों पर अपने अनुभव साझा करते हैं कि जब हम वन्यजीवों के बारे में सोचते हैं, तो हम केवल मेगाफौना की कल्पना करते हैं: हाथी, बाघ, व्हेल, शार्क और वास्तविक इंटरटाइडल ज़ोन को पूरी तरह से अनदेखा करते हैं - वह क्षेत्र जो जलमग्न है और नीप ज्वार द्वारा प्रतिदिन दो बार प्रकट होता है। लेखक ने 26 जुलाई 2005 को मुंबई में विनाशकारी भारी बारिश और बाढ़ के बारे में भी उल्लेख किया है और अफसोस जताया है कि शहर में चरम मौसम की घटनाओं और बढ़ते समुद्र के स्तर के लिए सबसे अधिक जोखिम होने के बावजूद, हम गहरी नींद से बाहर आने के लिए तैयार नहीं हैं।

अध्याय, *"तट को खा रहा है" (Eating up the coast)* इस बारे में है कि कैसे धीरे-धीरे केरल का समुद्र तट हर गुजरते साल के साथ नष्ट हो जाता है और समुद्र घरों के करीब रेंगता है। लेखक सरकार द्वारा बनाई जा रही समुद्री दीवारों के अलावा; बांधों; रेत खनन; नहरों, वनों की कटाई आदि के कारण अरब सागर में खाली होने वाली नदियों द्वारा लाए गए तलछट के कम होने को समस्या के लिए जिम्मेदार ठहरातें है।

अध्याय, *" बाघ की खोह "* (*The Tiger's Lair*) सुंदरबन में बाघ विधवाओं के जीवन पर चर्चा करता है। यह देखते हुए कि सुंदरबन एक बाघ अभयारण्य है और जंगल के बड़े हिस्से (नदियों को भी शामिल किया गया है) को कोर क्षेत्रों के रूप में अधिसूचित किया गया है, यह माना जाता है कि मछुआरों, केकड़ा पकड़ने वालों, शहद इकट्ठा करने वालों के लिए यह सीमा से बाहर है, जो अभी भी समान रूप से आशा और हताशा के साथ यात्राएं करते हैं। इनमें से ज़्यादातर दुर्घटनाओं में कोई मुवावजा देय नहीं होता है क्योंकि वो लोग सरकारी नियमों का उल्लंघन कर रहे होते हैं।

भाग 4 - **तीसरा ध्रुव (The Third Pole)** से अध्याय "*जब ग्लेशियर गायब हो जाता है*" (*When the Glacier Disappears)* लद्दाख में लेखक के अनुभव के बारे में है। एक ऐसा क्षेत्र जिसने सात दशकों में बाढ़ नहीं देखी थी, अचानक एक दर्जन वर्षों के अंतराल में पांच बार बर्बाद हो गया था। पिछले चार दशकों में सर्दियों के तापमान में लगभग 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है, और बर्फबारी तेजी से अप्रत्याशित हो गई है। वसंत के हिमपात

और गर्मियों के ग्लेशियर पिघलने के बीच एक महीने का लंबा अंतर है। सोनम वांगचुक द्वारा परिकल्पित आइस स्तूप (फिल्म 3 इडियट्स के नायक को याद करें!) जिसके लिए उन्होंने 2018 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार जीता था, की विस्तार से चर्चा की गई है। वांगचुक लद्दाख में प्रकृति के साथ जो हो रहा है, उसके लिए अपनी गहरी चिंता व्यक्त करते हैं और हमें रक्षा बजट, लोगों, परिदृश्यों, पारिस्थितिक तंत्र की सुरक्षा में मदद करने के लिए एक योजना पर समय रहते काम करने को कहते हैं।

अध्याय "दुनिया की छत पर एक तख्तापलट" (A Coup on the roof of the World), लद्दाख में मुक्त कुत्तों की बढ़ती संख्या के कारण समस्याओं पर चर्चा करता है। पशुधन की रक्षा के लिए प्रशिक्षित तिब्बती मास्टिफ, सेना के परिसरों के बाहर, अपशिष्ट भोजन की आसान उपलब्धता के साथ, दुष्ट होने लगे। प्रतियोगियों के रूप में कुत्तों का आना लुप्तप्राय तिब्बती भेड़िये के लिए नया और खतरनाक खतरा है। वन्यजीव विभाग के अध्ययनों से पता चला है कि हिम तेंदुए और तिब्बती भेड़ियों की तुलना में मुक्त कुत्ते अधिक पशुधन को मार रहे थे। पशुधन की हानि, यदि एक जंगली मांसाहारी द्वारा प्रभावित होती है, तो एक बीमा योजना के तहत कवर किया जाता है। कुत्ते, हालांकि जंगली हैं, जंगली जानवरों के रूप में नहीं गिने जाते हैं। स्थानीय चरवाहों को अब पशु संरक्षण पर विश्वास कम हो रहा है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से बौद्ध है और उनकी एक संस्कृति है जो उन्हें अत्यधिक लुप्तप्राय काली गर्दन वाले क्रेन, लुप्तप्राय तिब्बती मृग जिसे चिरू कहा जाता है, बार-हेडेड हंस, आदि की देखभाल करना सिखाती है पर वही संस्कृति उन्हें वह करने की अनुमति नहीं देता है जो उन्हें मुक्त कुत्तों के खतरे से बचा सकता है, उनके लिए खाने की उपलब्धता को खतम करना।

भाग 4 का अंतिम अध्याय, *"छिपे हुए देश में "* *(Into the Hidden Land),* सियांग घाटी में असम के निचले मैदानों में लेखक की यात्रा को कवर करता है। नेपाल के उत्तर-पश्चिमी सिरे के पास तिब्बती पठार से निकलने वाली नदी को ल्हासा पहुंचने पर यारलुंग त्संगपो, 'महान नदी' के रूप में जाना जाता है। नदी और इसकी घाटियों का गहरा धार्मिक महत्व है और इसे बौद्ध दुनिया में पवित्र माना जाता है। हालांकि, दुनिया का सबसे बड़ा पनबिजली बांध बनाने की चीन की योजना और अरुणाचल प्रदेश में अपने स्वयं के बांध बनाने का भारत का इरादा सांगपो के पानी पर पहला दावा करने के लिए एक ऐसे क्षेत्र में घातक होगा जहां पहाड़ युवा हैं और अभी भी ऊपर की ओर जोर दे रहे हैं। भारत पहले से ही यांग सांग चू और सियांग के पवित्र संगम और सियांग घाटी की रीढ़ के पार एक राजमार्ग का निर्माण कर रहा है। लेखक का सोचना है कि यह छिपी हुई भूमि भी पता नहीं कब "प्रगति" के दलदल में गायब हो जाये है।

पुस्तक के आखरी भाग **V - शहरों की ध्वनि (The Sound of Cities)** के अध्याय "जहां जंगली चीजें अभी भी हैं" (*Where the wild things still are*) एकान्त मधुमक्खियों की दुनिया में बसती है जिसे लेखक अभी भी बेंगलुरु में अपने घर के शहरी जंगल में बहुत कुछ देख पाती है। पारिस्थितिकी तंत्र में

मधुमक्खियों की प्रासंगिकता और उन्हें बनाए रखने के लिए हम क्या कर सकते हैं, यह भी समझाया गया है। यह निश्चित रूप से मेरे लिए एक आंख खोलने वाली बात थी कि दुनिया में 90 प्रतिशत से अधिक मधुमक्खियां छत्ते में नहीं रहती हैं और कोई शहद नहीं बनाती हैं!

पुस्तक का अंतिम अध्याय *"लैंडस्केप को सुनना"* (*Listening to Landscapes*) है, जहां लेखक हमें ध्वनि प्रदूषण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है जो मनुष्यों ने बनाया है और गंगा नदी डॉल्फिन और यहां तक कि प्रवासी पक्षियों के रूप में विविध जानवरों पर होने वाले कहर पर हमारा ध्यान केंद्रित किया है।

मार्मिक तस्वीरों के साथ मोहक प्रकृति लेखन और पत्रकारिता का संयोजन, यह पुस्तक हमारे पर्यावरण के एक भावुक इतिहासकार द्वारा एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है।

एक हस्तांतरणीय नौकरी में होने के कारण बिहार, गोवा, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, आदि राज्यों में असंख्य स्थानों पर काम करने के अवसर के साथ और असम, केरल, राजस्थान, सिक्किम, आदि स्थानों पर काम या अवकाश के लिए यात्रा करने के अवसर प्राप्त होने के कारण मुझे लेखक द्वारा कही गई कई बातों का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है। मेरा मानना है कि एक नागरिक के तौर पर, इंसान होने के नाते हमें न सिर्फ इस किताब को पढ़ना चाहिए, बल्कि प्रकृति को बचाने के लिए जो भी हमारे अधिकार में है, वो करना चाहिए। आखिरकार, हमारे पास रहने के लिए केवल एक पृथ्वी है।

दैनिक जागरण सिलीगुड़ी 27 अगस्त 2024

टाइम्स ऑफ इंडिया, कोलकाता 21 अगस्त 2024

50m land vanishes in Ganga amid fresh erosion

Fresh erosion has endangered Loharpur village

Sukumar Mahato | TNN

Behrampore: Fresh erosion was reported at Loharpur village under Pratapganj gram panchayat in Samserganj as the Ganga ate into 50m land on Monday. After spending a sleepless night, villagers have started vacating their homes and shifing to a local primary school, which the district administration has earmarked as shelter.

Moyna Rabidas from Loharpur village is one of the victims who had to vacate her home for now. "We demanded concrete anti-erosion work, but the irrigation department continues with their sandsack bund. Everyone is scared and leaving the bank area," she said.

Local MLA Amirul Islam said "The Centre has remained indifferent and not sanctioned fund for anti-erosion work. The state has so far allotted Rs 125 crore."

An alarming trend of river erosion in the area has been revealed in a study conducted by researchers from Raja Narendralal Khan Women's College, Midnapore, Sidho-Kanho-Birsha University and Alia University. Led by researcher Md Hasanuzzaman and supervised by assistant professor of geography Pravat Kumar Shit, the survey spans over 50 years since 1972, focusing on the dynamics, rate, and impact of river erosion on the population of Murshidabad and Malda. More than 300 families from Durgapur, Maheshtola, Kamalpur, Ghanashyampur, Dhusripara, Dhanghora, Harinandapur have been forced to shift home since 2020.

Biswajit Bera, geography professor at Sidho-Kanho-Birsha University said, "The construction of the Farakka barrage is likely to have altered the river morphology, creating sand and gravel bars. This disruption, along with fluctuating discharge and sediment deposition, has increased erosion."

SAMSERGANJ

Pravat Kumar Shit said, "The upper layer of the Ganga in Malda and Murshidabad is hard, but two feet below is soft white sand. Water pressure changes erode this sand, loosening the soil and bringing houses on the banks down."

The study, which used Digital Soarline Analysis System (DSAS), covered five blocks in Malda — Manikchak, English Bazar, Kaliachak-I, II and III — and two in Murshidabad — Farakka and Samserganj and included 547 villages within a 5km radius along the banks of the Ganga. The findings indicate at an average erosion rate of 0.1 km/year on the Ganga's left bank between 1972 and 2022, particularly upstream from the Farakka barrage. Twenty-eight villages, including Manikchawk, Birnagar, Godai, Pairpur, Rambari, and Farakka and Samshergunj, were identified as highly vulnerable.

गंगासागर में कपिलमुनि के मंदिर के करीब आता जा रहा है समुद्र

राज्य ब्यूरो, जागरण● कोलकाताः गंगासागर में तट को तोड़ते हुए समुद्र का पानी धीरे-धीरे कपिलमुनि मंदिर की ओर बढ़ रहा है। समुद्र तट हर दिन थोड़ा-थोड़ा करके टूट रहा है। इसलिए राज्य सरकार इस बार इस बात पर विशेष ध्यान दे रही है। 2019 में कपिलमुनि का मंदिर समुद्र तट से लगभग 470 मीटर दूर था, लेकिन अगस्त 2024 में यह दूरी घटकर 270 मीटर रह गई है। ऐसी जानकारी मिलने के बाद ही सुंदरबन विकास विभाग ने इस संबंध में सर्वेक्षण शुरू कराया है। इस बाबत जल्द ही इसकी विस्तृत रिपोर्ट सिंचाई विभाग को सौंपी जाएगी।

सिंचाई विभाग ने राज्य के नदी व समुद्र वाले कटावग्रस्त क्षेत्रों का सर्वेक्षण करने का निर्णय लिया है। इसी माह मानस भुइयां के मंत्री के रूप में सिंचाई विभाग का कार्यभार संभालने के बाद यह निर्णय लिया गया है। सुंदरबन विकास विभाग को उम्मीद है कि कपिलमुनि मंदिर की सुरक्षा के लिए जल्द ही आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। गंगासागर के तट से कुछ दूरी पर हरिभंगा चर(टापू) था। एक समय सागर द्वीप के लोग भुटभुटी (मोटर चालित नौका) से उस चर पर मछलियां पकड़ने के लिए जाते थे। उस चर के दूसरी ओर जंबूद्वीप था। जब जंबुद्वीप का क्षरण शुरू हुआ तो हरिभंगा चर में भी कटाव होने लगा। वर्तमान में हरिभांगा टापू डूब चुका है और तब से समुद्र की लहरें सीधे गंगा सागर के तट से टकरा रही हैं। जिससे कटाव तेज हो गया है।

पिछली पूर्णिमा के दौरान समुद्र तट संख्या 1 से 5 को जोड़ने वाली सड़क भी पूरी तरह से नष्ट हो गई थी। फिलहाल समुद्रतट संख्या तीन और चार की स्थिति भी गंभीर है। गंगासागर में समुद्री कटाव को कैसे रोका जाए, इस पर सरकारी स्तर पर चर्चा शुरू हो चुकी है। जुलाई में ही सुंदरबन विकास विभाग के मंत्री बंकिम चंद्र हाजरा ने नदी एवं समुद्री दो विशेषज्ञों के साथ कटाव प्रभावित क्षेत्र का दौरा किया था।

श्री राजन रंजन
मण्डल एलपीजी प्रमुख
इंडेन मण्डल कार्यालय, प्रयागराज
इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड

"प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती" – नेताजी सुभाषचंद्र बोस ।

लेख

हरेंद्र कुमार सिंह

तकनीशियन, पारेषण विभाग,

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रयागराज

देश की एकता में पावरग्रिड का योगदान

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ,भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के तहत एक 'महारत्न' सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है, जो देश की सबसे बड़ी विद्युत पारेषण (Transmission) कंपनी है। 'एक राष्ट्र, एक ग्रिड', एक आवृत्ति ,भारत के भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से विविध परिदृश्य में, देश को एकजुट रखने में ऊर्जा का अनवरत प्रवाह एक अदृश्य सूत्र की तरह काम करता है। पावरग्रिड इस प्रवाह का आधार स्तंभ है।

महारत्न कंपनी के रूप में, पावरग्रिड ने देश के कोने-कोने (सुदूर इलाकों)को बिजली के एक साझा नेटवर्क से जोड़कर भौगोलिक दूरियों को मिटाने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाता है।पावर ग्रिड न केवल बिजली ट्रांसमिशन, बल्कि दूरसंचार (Telecom) और परामर्श (Consultancy) सेवाओं में भी कार्य करती है ।

बिजली आधुनिक जीवन का आधार स्तंभ है, जो हमारे दैनिक कार्यों, उद्योगों, स्वास्थ्य सेवाओं , रक्षा क्षेत्रों और संचार को सुचारू रूप से चलाने के लिए अनिवार्य है। यह घरों को रोशन करने, उपकरण चलाने,

तकनीक को शक्ति देने और विकास को गति प्रदान करने के साथ-साथ जीवन को आरामदायक और सुरक्षित बनाती है और इन सब कार्यों में पावरग्रिड की निरंतर ऊर्जा प्रवाह में अहम भूमिका रहता है।

एक राष्ट्र, एक ग्रिड, एक आवृत्ति' (One Nation, One Grid, One Frequency) पावरग्रिड का सबसे बड़ा योगदान भारत के पाँच अलग-अलग क्षेत्रीय ग्रिडों (उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, और पूर्वोत्तर) को एकीकृत करके एक विशाल 'नेशनल ग्रिड' का निर्माण करना है।

समानता: 'एक आवृत्ति' (50 हर्ट्ज़) पर काम करने से, किसी एक क्षेत्र में बिजली की कमी होने पर दूसरे क्षेत्र से तुरंत आपूर्ति की जा सकती है, जिससे देश के हर कोने में समान ऊर्जा उपलब्धता सुनिश्चित होती है। सुदृढ़ता: इसने ग्रिड विफलता की संभावना को कम कर दिया है और पूरे देश में एक विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की है, जो आर्थिक एकीकरण का आधार है।

पावरग्रिड ने भौगोलिक रूप से दुर्गम क्षेत्रों को भी राष्ट्रीय ग्रिड से जोड़ा है।श्रीनगर-लेह ट्रांसमिशन लाइन के माध्यम से लद्दाख को देश की मुख्य बिजली ग्रिड से जोड़ा गया, जो सामरिक और भावनात्मक रूप से राष्ट्र की एकता को दर्शाता है। पूर्वोत्तर भारत को बाकी देश से हाई-वोल्टेज लाइनों के माध्यम से जोड़कर, वहां के विकास को गति दी गई है।पावरग्रिड, भारत सरकार के सहयोग से असम, मेघालय, मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम और त्रिपुरा जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में विद्युत पारेषण और वितरण प्रणालियों को मजबूत कर रहा है। जो कि पूर्वोत्तर भारत में बिजली आपूर्ति एवं ट्रांसमिशन एक चुनौती पूर्ण कार्य रहा है , एवं पावरग्रिड इस कार्य को सुगमता पूर्वक राष्ट्रीय एकता में भागीदारी निभा रहा है। सुदूर इलाकों में बिजली की निर्बाध आपूर्ति से वहां के लोगों में देश के साथ जुड़ाव को आत्मीयता प्रदान करता है।

नवीकरणीय ऊर्जा का एकीकरण (ग्रीन कॉरिडोर)भारत सरकार के 500 GW नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, पावरग्रिड 'ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर' विकसित कर रहा है। यह सौर ऊर्जा उत्पादक राज्यों (जैसे राजस्थान, गुजरात) से बिजली को देश के अन्य हिस्सों में ले जाता है, जो एक सस्टेनेबल और एकीकृत भविष्य का निर्माण है।

ग्रामीण और शहरी एकतादीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) और एकीकृत विद्युत विकास योजना (IPDS) जैसी योजनाओं को क्रियान्वित करके, पावरग्रिड ने ग्रामीण भारत को शहरी केंद्रों के साथ समानता के स्तर पर लाने में मदद की है। यह ग्रामीण-शहरी अंतर को कम करता है।

आपदा प्रबंधन में जब भी किसी क्षेत्र में प्राकृतिक आपदा आती है, पावरग्रिड अपने विश्वसनीय नेटवर्क के माध्यम से बिजली की बहाली सुनिश्चित करता है, जिससे राहत और बचाव कार्यों में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष

पावरग्रिड केवल बिजली की लाइनें नहीं बिछाता, बल्कि यह देश के विकास और एकता के धागे को भी पिरोता है। 'एक राष्ट्र, एक ग्रिड, एक आवृत्ति,के दृष्टिकोण के माध्यम से, पावरग्रिड ने यह सुनिश्चित किया है कि भारत की ऊर्जा स्वतंत्रता और प्रगति का लाभ देश के हर नागरिक तक पहुँच सके। यह तकनीकी और राष्ट्रीय एकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रेरक व्यक्तित्व

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

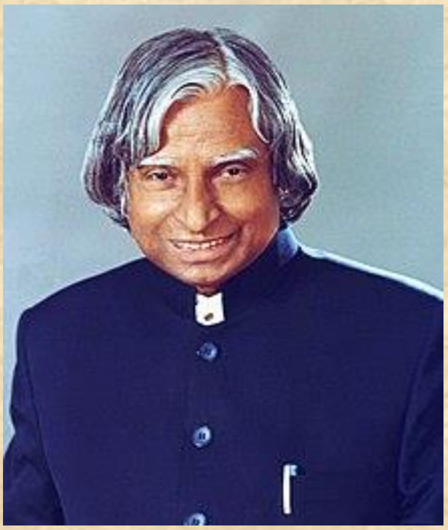

तमिलनाडु के रामेश्वरम में 15 अक्टूबर 1931 को जन्मे डॉ. अवुल पकिर जैनुलबदीन अब्दुल कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से वैमानिकी अभियांत्रिकी में विशेषज्ञता प्राप्त की। परियोजना निदेशक के रूप में डॉ. कलाम ने भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएलवी-III) के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसने जुलाई 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी के निकट की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया और भारत को अंतरिक्ष क्लब का एकमात्र सदस्य बनाया।

वे इसरो के प्रक्षेपण यान कार्यक्रम, विशेष रूप से पीएसएलवी कॉन्फ़िगरेशन के विकास के लिए जिम्मेदार थे। इसरो में दो दशकों तक कार्य करने और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकियों में महारत हासिल करने के बाद, डॉ. कलाम ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (आईएसआरओ) में एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) के मुख्य कार्यकारी के रूप में स्वदेशी निर्देशित मिसाइलों के विकास की जिम्मेदारी संभाली। वे अग्नि और पृथ्वी मिसाइलों के विकास और संचालन तथा कई संस्थानों के नेटवर्किंग के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में स्वदेशी क्षमता निर्माण के लिए जिम्मेदार थे। वे जुलाई 1992 से दिसंबर 1999 तक रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार और रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने परमाणु ऊर्जा विभाग के सहयोग से रणनीतिक मिसाइल प्रणालियों के शस्त्रीकरण और पोखरण-II परमाणु परीक्षणों का नेतृत्व किया, जिससे भारत एक परमाणु हथियार संपन्न देश बन गया। उन्होंने हल्के लड़ाकू विमानों जैसे कई विकास कार्यों और मिशन परियोजनाओं को आगे बढ़ाकर रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता को भी बढ़ावा दिया।

प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद (TIFAC) के अध्यक्ष और एक प्रख्यात वैज्ञानिक के रूप में, उन्होंने 500 विशेषज्ञों की सहायता से देश को प्रौद्योगिकी विजन 2020 की दिशा में अग्रसर किया, जिसने भारत को वर्तमान विकासशील स्थिति से विकसित राष्ट्र में परिवर्तित करने का मार्ग प्रशस्त किया। डॉ.

कलाम ने नवंबर 1999 से नवंबर 2001 तक कैबिनेट मंत्री के पद पर भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में कार्य किया और कई विकास अनुप्रयोगों के लिए नीतियों, रणनीतियों और मिशनों को विकसित करने के लिए जिम्मेदार थे। डॉ. कलाम कैबिनेट की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (SAC-C) के पदेन अध्यक्ष भी थे और उन्होंने भारत मिलेनियम मिशन 2020 का नेतृत्व किया।

डॉ. कलाम ने नवंबर 2001 से चेन्नई के अन्ना विश्वविद्यालय में प्रौद्योगिकी और सामाजिक परिवर्तन के प्रोफेसर के रूप में शैक्षणिक कार्य शुरू किया और शिक्षण एवं अनुसंधान कार्यों में संलग्न रहे। इन सबसे ऊपर, उन्होंने देश भर के हाई स्कूल के छात्रों से मिलकर युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय विकास के लिए प्रेरित करने का बीड़ा उठाया।

साहित्य जगत में डॉ. कलाम की चार पुस्तकें - "विंग्स ऑफ फायर", "इंडिया 2020 - ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम", "माई जर्नी" और "इग्नाइटेड माइंड्स - अनलीशिंग द पावर विद इन इंडिया" भारत और विदेशों में रहने वाले भारतीयों के बीच बेहद लोकप्रिय हो चुकी हैं। इन पुस्तकों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है।

डॉ. कलाम भारत के सबसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों में से एक हैं, जिन्हें 30 विश्वविद्यालयों और संस्थानों से मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने का अनूठा सम्मान प्राप्त है। उन्हें प्रतिष्ठित नागरिक पुरस्कारों - पद्म भूषण (1981) और पद्म विभूषण (1990) और सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न (1997) से सम्मानित किया गया है। वे कई अन्य पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं और कई पेशेवर संस्थानों के फेलो हैं।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का बचपन एवं उनका प्रेरक जीवन

इनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को धनुषकोडी गाँव (रामेश्वरम, रामनाथपुरम, तमिलनाडु) में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ । इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो अधिक पढ़े-लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा । वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे किन्तु उनकी लगन और उनके दिए हुए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए।

पाँच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम की पंचायत के प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा-संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था एवं अपेक्षा इन तीन शक्तियों को ठीक से समझ लेना और उन पर अपना प्रभाव स्थापित करना चाहिए।

पांचवी कक्षा में पढ़ते समय उनके अध्यापक उन्हें पक्षी के उड़ने के तरीके की जानकारी दे रहे थे, किन्तु जब छात्रों को समझ नहीं आया तो अध्यापक उनको समुद्र तट ले गए जहाँ उड़ते हुए पक्षियों को दिखाकर अच्छे से समझाया, इन्हीं पक्षियों को देखकर कलाम ने तय कर लिया कि उनको भविष्य में ऐरोनौटिक्स विज्ञान में ही जाना है। एपीजे अब्दुल कलाम के गणित के अध्यापक सुबह ट्यूशन लेते थे इसलिए वह सवेरे 4 बजे गणित की ट्यूशन पढ़ने जाते थे।

एपीजे अब्दुल कलाम ने अपनी आरम्भिक शिक्षा जारी रखने के लिए अख़बार वितरित करने का काम भी किया था। एपीजे अब्दुल कलाम ने 1950 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

राष्ट्रपति पद से कार्यकाल पूरा होने के बाद वे लगातार विभिन्न शिक्षण संस्थानों जैसे :- भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान,बैंगलोर के मानद फैलो एवं विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। भारतीय अन्तरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर बने और भारत भर के कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानोंके लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। एपीजे अब्दुल कलाम ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और अन्ना विश्वविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी एवं अंतरराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान हैदराबाद में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अध्यापन का कम किया।

27 जुलाई 2015 की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग में 'रहने योग्य ग्रह' पर एक व्याख्यान दे रहे थे तभी कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) होने के कारण वे बेहोश हो कर गिर पड़े और उसके बाद उनका निधन हो गया। इस प्रकार उन्होंने अपने जीवन के अंतिम सांस तक राष्ट्र की सेवा की।

एपीजे अब्दुल कलाम का जीवन सादा जीवन उच्च विचार के परिकल्पना को साकार करता है। उनका व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन अनुशासन, उच्च नैतिकता एवं सादगी से परिपूर्ण था। उनका जीवन राष्ट्र निर्माण हेतु समर्पित था। वे अत्यंत विनम्र शालीन व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। उनकी वैज्ञानिक सोच, समझ एवं दृष्टिकोण हर भारतीय बच्चे के लिए अनुकरणीय होना चाहिए। वे आधुनिक भारत में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने वाले अग्रणी वैज्ञानिक थे। उनका जीवन प्रेरणादायी है और हमें जीवन में सकारात्मक विचारों के साथ सदा आगे बढ़ते रहने के लिए वर्षों तक प्रेरित करता रहेगा।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के प्रेरक विचार

"सबसे उत्तम कार्य क्या होता है? किसी इंसान के दिल को खुश करना, किसी भूखे को खाना देना, जरूरतमंद की मदद करना, किसी दुखियारे का दुख हल्का करना और किसी घायल की सेवा करना"

“ मैं यह बहुत गर्वपूर्वक तो नहीं कह सकता कि मेरा जीवन किसी के लिये आदर्श बन सकता है; लेकिन जिस तरह मेरी नियति ने आकार ग्रहण किया उससे किसी ऐसे गरीब बच्चे को सांत्वना अवश्य मिलेगी जो किसी छोटी सी जगह पर सुविधाहीन सामजिक दशाओं में रह रहा हो। शायद यह ऐसे बच्चों को उनके पिछड़ेपन और निराशा की भावनाओं से विमुक्त होने में अवश्य सहायता करे। ”

“ 2000 वर्षों के इतिहास में भारत पर 600 वर्षों तक अन्य लोगों ने शासन किया है। यदि आप विकास चाहते हैं तो देश में शांति की स्थिति होना आवश्यक है और शांति की स्थापना शक्ति से होती है। इसी कारण प्रक्षेपास्त्रों को विकसित किया गया ताकि देश शक्ति सम्पन्न हो। ”

संदर्भ : राष्ट्रपति का कार्यालय http://www.presidentofindia.gov.in

बाल कविता

जागो प्यारे

उठो लाल, अब आँखें खोलो,
पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।
बीती रात, कमल-दल फूले,
उनके ऊपर भौंरे झूले।
चिड़ियाँ चहक उठीं पेड़ों पर,
बहने लगी हवा अति सुंदर।
नभ में न्यारी लाली छाई,
धरती ने प्यारी छवि पाई।
भोर हुआ, सूरज उग आया,
जल में पड़ी सुनहरी छाया।
ऐसा सुंदर समय न खोओ,
मेरे प्यारे अब मत सोओ।

अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"

बाल कविता

चांद का कुर्ता

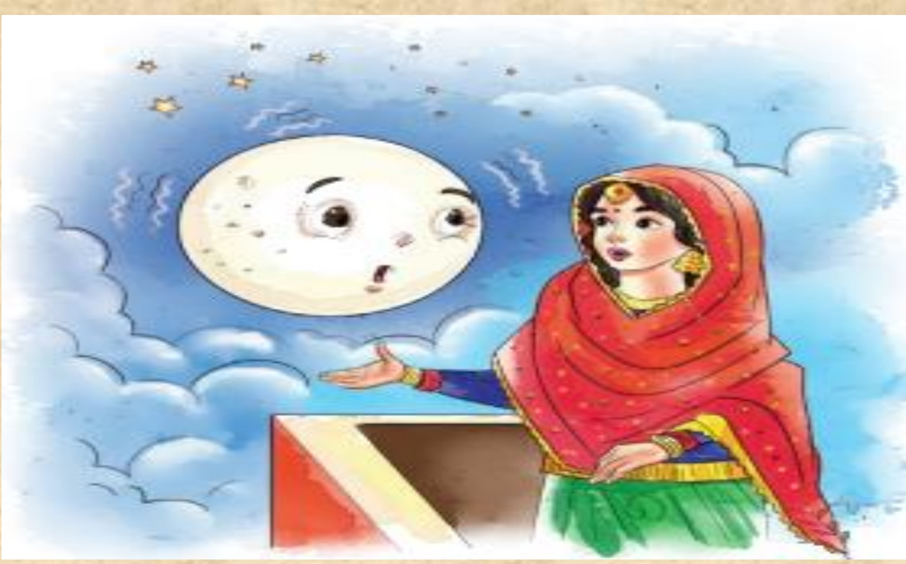

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
''सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।
सनसन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।''
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, ''अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोने।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।
कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।
घटता-बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।
अब तू ही ये बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आए ? ''

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर"

कार्यालय के दैनिक कार्य में प्रयोग होने वाले प्रचलित प्रशासनिक शब्द

क्रम	अँग्रेजी शब्द	हिन्दी अर्थ
1	Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जा सकती है।
2	Concurrence of Finance Department is required	वित्त विभाग की सहमति आवश्यक है।
3	Timely compliance may be ensured	समय से अनुपालन सुनिश्चित करें
4	Recommendation made by the committee is approved	समिति द्वारा की गई अनुशंसा को अनुमोदन प्रदान किया जाता है।
5	Please use Hindi in correspondence	कृपया कार्यालयीन पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करें।
6	In consultation with commercial section the proposal has been prepared	वाणिज्य अनुभाग की सलाह से यह प्रस्ताव तैयार किया गया है।
7	Please reconcile the discrepancies in the entries	कृपया प्रविष्टियों में हुई त्रुटियों में सुधार करें।
8	Departmental action is in progress	विभागीय कार्रवाई प्रगति पर है।
9	Early action in the matter is requested	मामले में तुरंत कार्यवाही किए जाने का अनुरोध है।
10	Draft reply is put up for approval	मसौदा उत्तर अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है।
11	In principle approval	सैद्धान्तिक अनुमोदन प्रदान किया जाता है।
12	Seen and returned	देख लिया और लौटाया
13	Please expedite compliance	कृपया तेजी से अनुपालन सुनिश्चित करें।
14	Ex-post facto sanctions granted	कार्योत्तर मंजूरी प्रदान की जाती है।
15	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
16	Approved as proposed	यथा प्रस्तावित अनुमोदित /प्रस्ताव के अनुसार अनुमोदित
17	Financial Concurrence may be accorded	वित्तीय सहमति प्रदान की जा सकती है
18	Delegation of Financial Powers	वित्तीय शक्तियों का हस्तांतरण /प्रत्यायोजन
19	Agenda of the Meeting is enclosed	बैठक की कार्यसूची संलग्न है।
20	Short Term Contract	लघु अवधि संविदा
21	Prescribed format	निर्धारित प्रारूप
22	Order of appointment	नियुक्ति आदेश
23	Medical reimbursement	चिकित्सा प्रतिपूर्ति
24	Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान किया जाए
25	Act of commission and omission	कृताकृत, भूल चूक लेनी देनी
26	Acknowledgement	पावती
27	Disposal of cases	मामलों का निपटारा
28	Letter of allotment	आवंटन-पत्र
29	Promotion by seniority	वरिष्ठता अनुसार पदोन्नति
30	Status quo	यथास्थिति बरकरार रखना

31	Seniority-cum-merit	मेरिट/योग्यता सह वरिष्ठता
32	Revision of pay scale	वेतनमान का पुनर्निर्धारण
33	Quotation	कोटेशन
34	Suo moto	स्वतः संज्ञान
35	Ad hoc	तदर्थ
36	Fait accompli	सम्पन्न कार्य
37	In toto	पूर्णतः /सम्पूर्ण
38	Meritorious Service	सराहनीय सेवा
39	Faux pas	गलत कदम
40	Absentee statement	अनुपस्थिति विवरण
41	Financial Emergency	वित्तीय आपातकाल
42	Disinvestment	विनिवेश
43	Discretionary power	विवेकाधिकार
44	Contractual Service	संविदा सेवा
45	Contributory Scheme	अंशदायी योजना
46	Contingency Plan	आपात निर्वाह / आपातकालीन योजना
47	Contempt of Court	न्यायालय की अवमानना
48	Breach of Discipline	अनुशासन भंग
49	Borrowing Power	उधार लेने की शक्ति
50	Brain Drain	प्रतिभा पलायन
51	Book of Accounts	खाता बही
52	Booklet	पुस्तिका
53	Proceedings	कार्यवाही
54	Procedure	प्रक्रिया/क्रियाविधि/कार्यविधि
55	Preliminary Examination	प्रारम्भिक जांच
56	Earned Leave Encashment	अर्जित अवकाश नकदीकरण
57	Sanctioned Budget	संस्वीकृत बजट
58	Revised Estimate	संशोधित अनुमान
59	Budget Estimate	बजट अनुमान
60	Capital Expenditure	पूंजीगत व्यय
61	Capital Punishment	मृत्युदंड
62	Ab initio	आरंभिक , प्रारम्भ से
63	Abolition of Posts	पदों की समाप्ति
64	Above mentioned	उपर्युक्त , ऊपर लिखित, कथित, उपरोक्त
65	Bad Conduct	दुराचरण, बुरा व्यवहार

66	Benefit of Doubt	संदेह-लाभ
67	Character Assassination	चरित्र हनन
68	Charge Assumption Report	कार्यभार ग्रहण रिपोर्ट
69	Debarment	रोक, विवर्जन
70	Declaration Form	घोषणा-पत्र
71	Employee's Provident Fund	कर्मचारी भविष्य निधि
72	Accepted for Payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
73	Acceded to	स्वीकार किया गया
74	Back to work	कार्य पर लौटना
75	Ban on Creation of Posts	पदों के सृजन पर रोक
76	Charge Handed Over	कार्यभर सौंप दिया
77	Commutation of Pension	पेंशन का सारांशीकरण
78	Duly Filled in	विधिवत भरा हुआ
79	Comptroller and Auditor General	नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
80	Attorney General of India	भारत के महान्यायवादी
81	Executive Secretary	कार्यपालक सचिव
82	According to the rules in vogue	प्रचलित नियमों के अनुसार
83	Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
84	Action has not yet been initiated	कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गई है
85	Address to all concerned	सभी संबंधितों को लिखा जाए
86	Admission with permission	कृपया अनुमति लेकर अंदर जाएँ
87	A matter of extreme urgency	अति आवश्यक मामला
88	Arrear Claim	बकाए का दावा
89	As above	उपरोक्त के अनुसार
90	As already pointed out	जैसा कि पहले बताया जा चुका है
91	As laid down	जैसा की पूर्व निर्धारित है
92	As intimated earlier	जैसा कि पहले ही सूचित किया जा चुका है
93	As modified	यथा संशोधित / संशोधित के अनुसार
94	After adequate consideration	समुचित विचार-विमर्श के बाद
95	A list is placed below	सूची नीचे दी गई है
96	After perusal	अवलोकन के बाद
97	Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की जाए
98	Acting in official capacity	पद की हैसियत से कार्य करते हुए
99	All concern should note	सभी संबंधित ध्यान दें
100	Administrative ability	प्रशासनिक योग्यता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (उपक्रम) की वित्त वर्ष 2025-26 की उपलब्धियां

अध्यक्षता : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) का अध्यक्ष कार्यालय होने के नाते अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने, कार्मिकों को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा गतिविधियों को जारी रखने के उद्देश्य से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) के तत्वावधान तथा अध्यक्ष कार्यालय, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज की अध्यक्षता में वित्त वर्ष 2025-2026 **(1 अप्रैल, 2025 से 31.03.2026 की अवधि में)** के दौरान सदस्य कार्यालयों हेतु निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया :-

क्रम	कार्यक्रम / प्रतियोगिता का नाम	आयोजन की तिथि
1	हिन्दी कार्यशाला	**24.06.2025** **10.09.2025** **15.12.2025** **24.03.2026**
2	राजभाषा संगोष्ठी, 2026	**11.02.2026**
3	हिन्दी भाषा ज्ञान एवं राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	**24.06.2025**
4	हिन्दी टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता	**24.06.2025**
5	राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	**10.09.2025**
6	शुद्ध हिन्दी लेखन प्रतियोगिता	**10.09.2025**
7	हिन्दी भाषा ज्ञान एवं शुद्ध हिन्दी प्रतियोगिता	**15.12.2025**
8	अनुवाद प्रतियोगिता	**15.12.2025**
9	चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता	**20.01.2026**
10	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता प्रतियोगिता	**24.03.2026**
11	राजभाषा प्रश्नोत्तरी , पत्र एवं टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता	**24.03.2026**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज उपक्रम की गतिविधियां की कुछ झलकियाँ/यादें/तस्वीरें में :-

सदस्य कार्यालयों हेतु दिनांक 10.09.2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला की कुछ तस्वीरें

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज
हिन्दी कार्यशाला
दिनांक :- 10-09-2025

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE ALLAHABAD (INDIA)
ISO 9001:2008

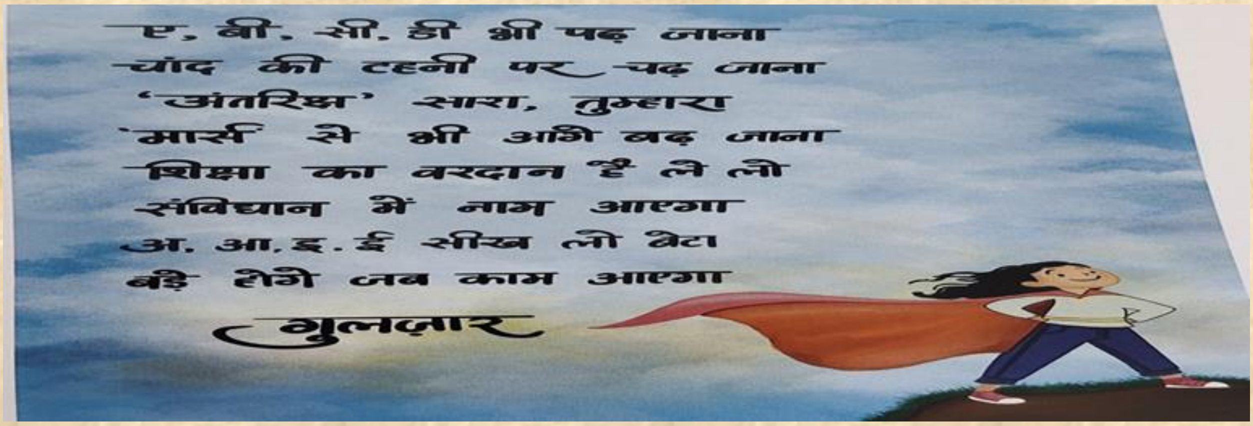
ए, बी, सी, डी भी पढ़ जाना
चांद की टहनी पर चढ़ जाना
'अंतरिक्ष' सारा, तुम्हारा
'मार्स' से भी आगे बढ़ जाना
शिक्षा का वरदान है ले लो
संविधान में नाम आएगा
अ, आ, इ, ई सीख लो बेटा
बड़े होगे जब काम आएगा
गुलज़ार

सदस्य कार्यालयों हेतु दिनांक 15.12.2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला की कुछ तस्वीरें

"हालांकि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है"- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

दिनांक 25.09.2026 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की वित्त वर्ष 2025-26 की द्वितीय छमाही बैठक की कुछ तस्वीरें

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (उपक्रम)
11 वीं छमाही बैठक
एवं वित्त वर्ष 2025-26 की द्वितीय छमाही बैठक का आयोजन

सदस्य कार्यालयों हेतु दिनांक 24.03.2026 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला की कुछ तस्वीरें

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है, उसे हम सबको अपनाना है - लालबहादुर शास्त्री

हिन्दी दिवस, 2025 के अवसर पर दिनांक 14 एवं 15 सितंबर, 2025 को गांधीनगर (गुजरात) में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (उपक्रम) के अध्यक्ष श्री वेंकटेश्वर एल , कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य महोदय पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

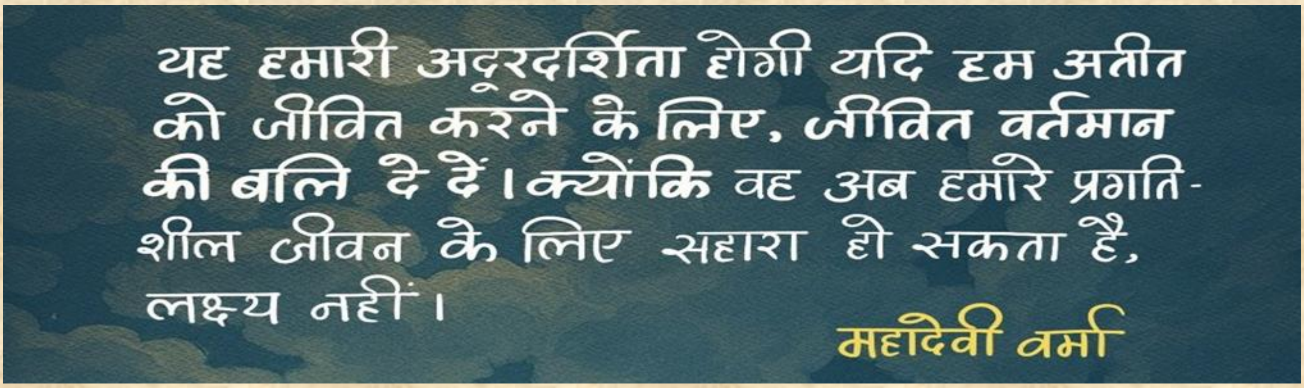

राजभाषा संगोष्ठी, 2026 की कुछ तस्वीरें

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (उपक्रम)
के तत्वावधान में
राजभाषा संगोष्ठी 2026
इलाहाबाद (भारत)
ISO 9001:2008

हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव-समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों हेतु दिनांक 20/01/2026 को आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता की तस्वीरें

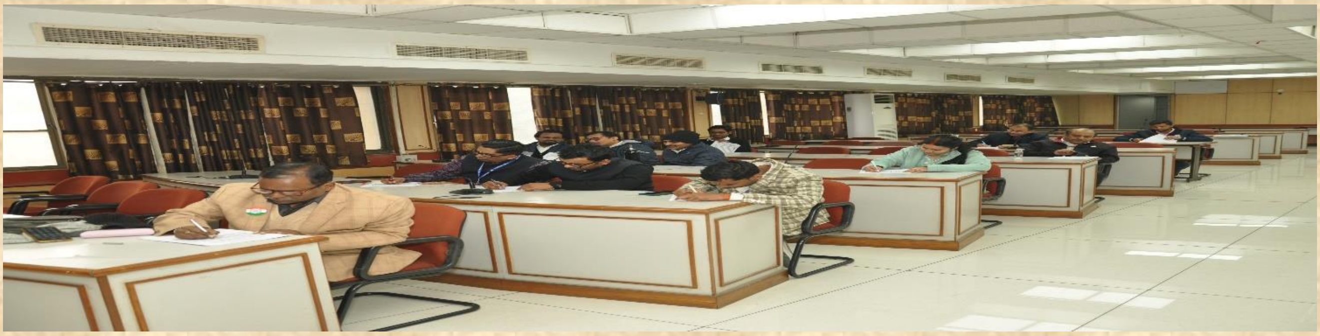

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज
एक परिचय

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज की स्थापना सन 1948 में नागर विमानन महानिदेशालय, भारत सरकार द्वारा की गई थी। वर्तमान में यह भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) का एक हिस्सा है । भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की स्थापना भारत सरकार, नागर विमानन मंत्रालय के अधीन संसद के एक अधिनियम के तहत सन 1994 में एक कार्पोरेट निकाय के रूप में हुई थी । नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज एयर नैविगेशन सर्विसेज के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने की दायित्व के साथ इस क्षेत्र में अग्रणी संस्थान है। सीएटीसी,अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन द्वारा प्रत्यायोजित वैश्विक मानकों एवं पद्धतियों के अनुसार एटीसी एवं सीएनएस कार्मिकों को दक्षता आधारित प्रशिक्षण प्रदान करता है। एटीसी एवं सीएनएस प्रशिक्षण दोनों ही संरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील हैं तथा इन्हें सरकारी नियामक नागर विमानन महानिदेशालय तथा अंतर्राष्ट्रीय नियामक अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन द्वारा विनियमित किया जाता है।

एटीम प्रशिक्षण आईसीएओ अनुलग्नक-1 में निर्धारित मानकों को पूरा करने पर निर्भर है तथा यह वायु यातायात को सुरक्षित एवं वायु यातायत के कुशल प्रवाह तथा प्रबंधन हेतु दक्षता से परिपूर्ण वायु यातायात नियंत्रक तैयार करती है। सीएनएस प्रशिक्षण की प्रकृति तकनीकी होती है तथा यह उच्च कौशल एवं गुणवत्तायुक्त विशेषज्ञ, वायु यातायात इलेक्ट्रानिक संरक्षा कार्मिक (ATSEPs) तैयार करती है ताकि एयर नैविगेशन सेवाओं के आधारभूत ढ़ाचों, एयर सेफ़्टी क्रिटिकल इक्वीपमेंट की कठोरतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो। सीएटीसी, आईसीएओ ट्रेनएयर प्लस कार्यक्रम का एक पूर्ण सदस्य है जो हवाई नेविगेशन सेवाओं के क्षेत्र में प्रशिक्षण का एक विश्व स्तर पर मानकीकृत प्रारूप है। सीएटीसी आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित है।

वायु यातायात प्रबंधन (Air Traffic Management) प्रशिक्षण संबंधी संचालित पाठ्यक्रमों का विवरण

✈ एटीएम प्रशिक्षण पाठ्यक्रम: एक परिचय

एटीएम प्रशिक्षण का दायरा

सीएटीसी के एटीएम संकाय का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित हैं:

- **ATSTO पाठ्यक्रम**
- **AELTO/TSP पाठ्यक्रम**
- **विशेषीकृत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम**

🛬 ATSTO पाठ्यक्रम

CATC, ATSTO के रूप में निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित करता है (Aircraft Rules 1937 के नियम 95 और अनुसूची III के अनुसार):

- एरोड्रोम कंट्रोल कोर्स (ADC)
- अप्रोच कंट्रोल कोर्स (APP)
- एरिया कंट्रोल कोर्स (ACC)
- सर्विलांस कंट्रोल कोर्स (SCC)

इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिभागियों को लाइसेंस/एटीएस यूनिट रेटिंग प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षित करना है।

🎙 AELTO/TSP पाठ्यक्रम

CATC, AELTO/TSP के रूप में निम्नलिखित प्रशिक्षण संचालित करता है (CAR 7G-V और CAR 7G-III के अनुसार):

- AELP के लिए प्रारंभिक प्रशिक्षण
- AELP सुधार प्रशिक्षण
- इंटरलोक्यूटर्स और रेटर्स के लिए प्रारंभिक प्रशिक्षण
- इंटरलोक्यूटर्स और रेटर्स के लिए पुनरावृत्ति प्रशिक्षण

प्रथम दो पाठ्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिभागियों को रेडियोटेलीफोनी कम्युनिकेशन के दौरान होने वाली संभावित गलतफहमियों को पहचानना और दूर करना है, जब कि अंतिम दो पाठ्यक्रमों का उद्देश्य इंटरलोक्यूटर्स और रेटर्स को उन के निर्धारित कार्यों के सफलतापूर्वक निष्पादन के लिए उन्हें प्रशिक्षित करना है।

📚 विशेषीकृत पाठ्यक्रम

एटीसी रेटिंग/लाइसेंस से परे, ATM प्रशिक्षण विभाग निम्नलिखित विशेष पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है:

- **SAR/ASARMC कोर्स** – खोज एवं बचाव सेवाओं का संगठन और संचालन
- **इंस्ट्रक्शनल टेक्नीक कोर्स (ITC)** – प्रशिक्षण तकनीक, मूल्यांकन और रिपोर्ट लेखन
- **AIS कोर्स** – एरोनॉटिकल सूचना सेवाओं की समझ और अनुप्रयोग
- **AGA कोर्स** – ICAO मानकों के अनुसार एरोड्रोम रखरखाव
- **TEM कोर्स** – खतरे और त्रुटि प्रबंधन
- **एयरसाइड मैनेजमेंट कोर्स** – ICAO और DGCA मानकों के अनुरूप संचालन
- **SMS कोर्स** – सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली की अवधारणा और जोखिम मूल्यांकन
- **SAR रिफ्रेशर कोर्स** – खोज एवं बचाव सेवाओं का पुनः प्रशिक्षण

🌍 ICAO Trainair Plus STPs

CATC, Course Development Unit (CDU) के साथ मिलकर निम्नलिखित STPs भी संचालित करता है:

- ATC रेडियो टेलीफोनी में गलत संचार की रोकथाम (Prevention of miscommunication in ATC Radiotelephony)
- वायु यातायात नियंत्रण में अस्थिर अप्रोच (Unstable Approaches in Air Traffic Control)
- एटीसी हेतु बेसिक मौसम विज्ञान (Basic Meteorology Course for Air Traffic Control)
- बेसिक ATC रेडियो टेलीफोनी (Basic ATC Radio Telephony Course)
- ATC दक्षता मूल्यांकन (ATC Competency Assessment Course)
- atsCAP सिस्टम पर Pseudo Pilot प्रशिक्षण (Pseudo Pilot Training for ATC Surveillance and Procedural Control Simulator: atsCAP system)

पाठ्यक्रम अवधि और संक्षिप्त उद्देश्य

खोज एवं बचाव)SAR) / एरोनॉटिकल SAR मिशन कंट्रोल)ASARMC)

- **अवधि:** न्यूनतम 18 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** प्रतिभागियों को खोज एवं बचाव सेवाओं का कुशल संगठन और संचालन का समन्वय करने में सक्षम बनाना।

इंस्ट्रक्शनल टेक्नीक कोर्स)ITC)

- **अवधि:** 10 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:**
    - प्रशिक्षण संगठन, मानव कारक, तकनीक और मूल्यांकन विधियों का वर्णन।
    - चुने हुए विषय पर प्रशिक्षक गाइड तैयार करना।
    - प्रस्तुति के माध्यम से ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्रदर्शित करना।

एरोनॉटिकल सूचना सेवाएँ)AIS) कोर्स

- **अवधि:** 10 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:**
    - AIS की कार्यप्रणाली और प्रकाशनों की समझ।
    - ICAO ढाँचे का अनुप्रयोग।
    - सूचना प्रबंधन और सुरक्षा मानकों का पालन।

एरोड्रोम और ग्राउंड एड्स)AGA) कोर्स

- **अवधि:** 05 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** ICAO मानकों का अनुप्रयोग, DGCA आवश्यकताओं का पालन और खतरों की पहचान व निवारण।

खतरा और त्रुटि प्रबंधन)TEM) कोर्स

- **अवधि:** 03 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** ATC में संभावित खतरे और त्रुटियों की पहचान और उनका प्रबंधन।

एयरसाइड मैनेजमेंट कोर्स

- **अवधि:** 03 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** ICAO, DGCA और AAI मानकों के अनुसार एयरसाइड संचालन प्रबंधन की जानकारी।

सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली)SMS) कोर्स

- **अवधि:** 04 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** सुरक्षा अवधारणा की समझ, जोखिम मूल्यांकन, SCARS फॉर्म का उपयोग और जोखिम निवारण।

SAR रिफ्रेशर कोर्स

- **अवधि:** 03 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** खोज एवं बचाव सेवाओं का पुनः संगठन और संचालन।

ATC रेडियो टेलीफोनी में गलत संचार की रोकथाम

- **अवधि:** 03 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** अधिकतम 10 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** ICAO मानकों के अनुसार संचार त्रुटियों की रोकथाम।

अस्थिर अप्रोच)Unstable Approaches)

- **अवधि:** 03 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** अधिकतम 10 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** अस्थिर अप्रोच के कारणों की पहचान और रोकथाम।

बेसिक मौसम विज्ञान)Meteorology) कोर्स

- **अवधि:** 05 कार्य दिवस
- **बैच शक्ति:** न्यूनतम 08 / अधिकतम 12 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** मौसम संबंधी जानकारी का सही उपयोग और व्याख्या।

बेसिक ATC रेडियो टेलीफोनी कोर्स

- **अवधि:** 05 कार्य दिवस (35 घंटे)
- **बैच शक्ति:** 12 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** संचार उपकरण का सही उपयोग और गलत संचार की रोकथाम।

ATC दक्षता मूल्यांकन कोर्स

- **अवधि:** 03 कार्य दिवस (21 घंटे)
- **बैच शक्ति:** अधिकतम 12 प्रशिक्षु प्रति बैच
- **उद्देश्य:** दक्षता आधारित वातावरण में प्रदर्शन का मूल्यांकन और प्रशिक्षुओं को प्रभावी फीडबैक देना।

Pseudo Pilot प्रशिक्षण)atsCAP सिस्टम(

- **अवधि:** 03 दिन / 21 घंटे
- **बैच शक्ति:** अधिकतम 6 (दो प्रशिक्षकों के साथ 12)
- **उद्देश्य:** atsCAP सिमुलेटर का उपयोग कर वास्तविक वातावरण जैसा प्रशिक्षण देना।

वर्ष 2025-26 के दौरान वायु यातायात प्रबंधन (Air Traffic Management) प्रशिक्षण संबंधी उपलब्धियां

सीएटीसी में वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान एटीएम संकाय में सम्पन्न हुए विविध पाठ्यक्रमों का विवरण अधोलिखित है :-

क्रम	पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या
	एटीएसटीओ (ATSTO) पाठ्यक्रम		
1	एरोड्रोम कंट्रोल कोर्स (ADC)	एडीसी-56-76 (21)	240
2	अप्रोच कंट्रोल कोर्स (APP)	एपीपी-57-77 (21)	246
3	एरिया कंट्रोल कोर्स (ACC)	एसीसी-42-53 (12)	142
4	सर्विलांस कंट्रोल कोर्स (SCC)	एससीसी-60-79 (20)	150
	एईएलटीओटीएसपी (AELTO/TSP) पाठ्यक्रम		
1	AELP प्रारंभिक प्रशिक्षण	एईएलपी-36-53 (18)	306
2	इंटरलोक्यूटर्स और रेटर्स के लिए पुनरावृत्ति प्रशिक्षण	आर-6 (1)	19
	विशेषीकृत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम		
1	SAR/ASARMC कोर्स	एसएआर-24-25 (2)	24
2	इंस्ट्रक्शनल टेक्नीक कोर्स (ITC)	आईटीसी-40-41 (2)	20
3	AIS कोर्स	एआईएस-13-14 (2) ,	29
4	पैंस-ऑप्स (बेसिक) कोर्स	1	12
	इकाओ ट्रेनएयर प्लस एसटीपी		
1	ATC दक्षता मूल्यांकन	2	24
2	atsCAP सिस्टम पर Pseudo Pilot प्रशिक्षण	3	36

विभिन्न वायु यातायात प्रबंधन (Air Traffic Management) प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रतिभागियों की कुछ तस्वीरें।

प्रस्तुति

श्री सत्यन कुमार,

उप महाप्रबंधक (एटीएम), सीएटीसी, प्रयागराज

लेख

भारत में जल संसाधनों की वर्तमान स्थिति

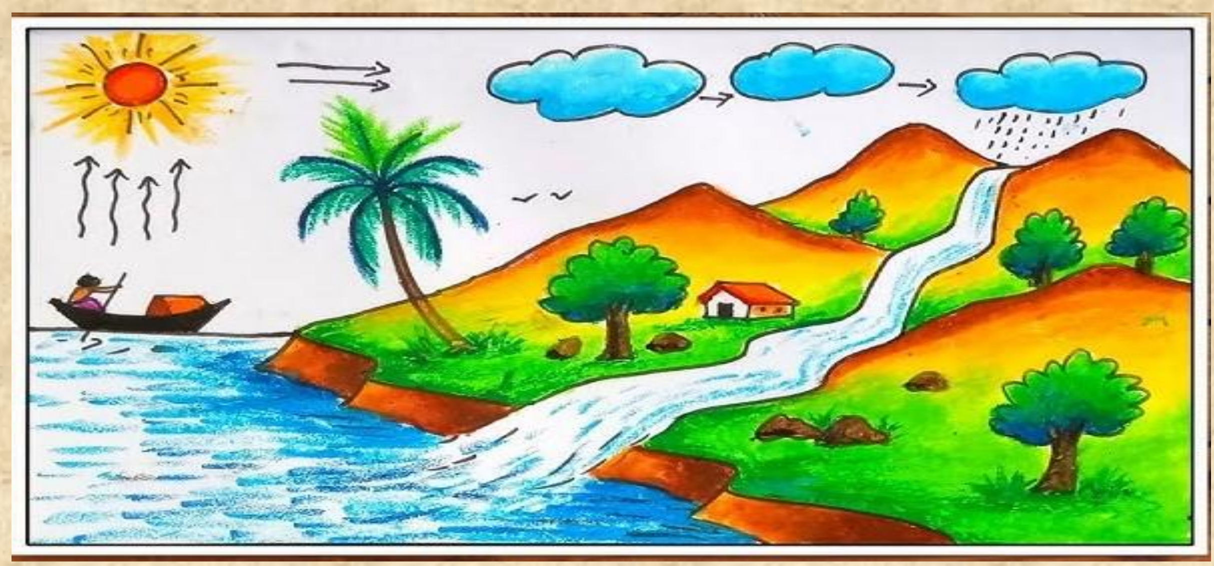

कहते हैं जल ही जीवन है । इस वाक्य में ही भारत के वर्तमान जल संसाधनों उचित उपयोग की सारी बातें समाहित है। जल के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। पृथ्वी के हर कार्य में जल का उपयोग होता है। वैसे तो सम्पूर्ण पृथ्वी का 71% हिस्सा चारों तरफ से जल से घिरा है और 29% भू-भाग पर सम्पूर्ण विश्व की बसावट रहती है। इस 71% जल में से अधिकांश जल समुद्री है और यह खारा है । पृथ्वी पर कुल पीने योग्य जल मात्र 4 % के आसपास उपलब्ध है। इस प्रकार, जल एक अनमोल संसाधन है, जो पृथ्वी पर सभी जीवन रूपों के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसकी महत्ता कृषि, औद्योगिक, घरेलू, मनोरंजन और पर्यावरणीय गतिविधियों तक फैली हुई है, जो इसे दैनिक मानवीय आवश्यकताओं और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण बनाती है।

जल, पृथ्वी पर उपलब्ध सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधनों में से एक है जिसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है । पृथ्वी पर हर जीव जैसे मनुष्य, पशु और पौधे आदि सभी का जीवन जल पर निर्भर हैं । यह जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है । जल का उपयोग कृषि, औद्योगिक, घरेलू, मनोरंजन और पर्यावरणीय गतिविधियों आदि में होता है। सभी मनुष्यों को अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए जल की आवश्यकता होती है। प्राकृतिक पानी के स्रोतों में सतही जल, नदी प्रवाह, भूजल और जमा हुआ पानी शामिल हैं। कृत्रिम पानी के स्रोतों में और अलवणीकृत समुद्री जल शामिल हो सकते हैं।

भारत में जल संसाधन

भारत के जल संसाधनों में वर्षा, सतही और भूजल भंडारण, और जलविद्युत क्षमता आदि शामिल हैं। भारत में प्रति वर्ष औसतन 1,200 मिलीमीटर (47 इंच) वर्षा होती है, जिसके कारण हमें पृथ्वी पर ताजा ताजा जल प्राप्त होता है । भारत में दुनिया की 18% आबादी रहती है, लेकिन दुनिया के जल संसाधनों का केवल 4% ही उपलब्ध है । देश की जल समस्याओं का समाधान करने के लिए भारतीय नदियों को आपस में जोड़ने की योजना प्रस्तावित है । भारत के लगभग 80% क्षेत्र में 750 मिलीमीटर (30 इंच) या उससे अधिक वार्षिक वर्षा होती है। हालाँकि, यह वर्षा समान रूप से वितरित नहीं होती है और इसमें स्थानिक और मौसमी भिन्नताएँ

शामिल होती हैं। अधिकांश वर्षा मानसून के मौसम (जून से सितंबर) में होती है, जिसमें उत्तर-पूर्व और उत्तर क्षेत्रों में पश्चिम और दक्षिण की तुलना में अधिक वर्षा होती है। इसके अलावा, हिमालय में सर्दियों के दौरान हिम के पिघलने से उत्तरी नदियों के प्रवाह में योगदान मिलता है, जबकि दक्षिणी नदियों में साल भर प्रवाह में अधिक परिवर्तनशीलता देखी जाती है। हिमालयी बेसिन में बाढ़ और जल की कमी का मौसमी पैटर्न देखा जाता है। भारत के चार प्रमुख सतही जल संसाधन नदियाँ, झीलें, झरने और तालाब हैं। देश में लगभग 10,350 नदियाँ और उनकी सहायक नदियाँ हैं। भारत की सभी नदी घाटियों में औसत वार्षिक प्रवाह 1900 घन किलोमीटर के आसपास है। नदी में जल प्रवाह इसके जलग्रहण क्षेत्र या नदी घाटी के आकार और उस क्षेत्र में होने वाली वर्षा पर निर्भर करता है। व्यापक नदी प्रणालियों के होने के बावजूद, भारत में सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल और सतत कृषि के लिए सिंचाई जल की उपलब्धता सीमित है।

भूजल विभिन्न क्षेत्रों की जल आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूरे देश के लिए वार्षिक पुनःपूर्ति योग्य भूजल संसाधन 433 बिलियन क्यूबिक मीटर है। इसमें 67% योगदान वर्षा से होता है, जबकि अन्य स्रोतों, जैसे नहरों से रिसाव, सिंचाई से लौटने वाला जल, जल निकायों से रिसाव और जल संरक्षण संरचनाओं के कारण कृत्रिम पुनःभरण, से 33% योगदान होता है।

केंद्रीय भूजल बोर्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक वार्षिक शुद्ध भूजल उपलब्धता है, जबकि दिल्ली में सबसे कम (0.29 सेमी) है। देश की जनसंख्या प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता को प्रभावित करती है और भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता घट रही है। औसत वार्षिक प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 2001 में 1816 क्यूबिक मीटर, 2011 में 1545 क्यूबिक मीटर थी और 2021 और 2031 में क्रमशः 1486 क्यूबिक मीटर और 1367 क्यूबिक मीटर तक कम होने का अनुमान है।

भारत में जल संकट एक गंभीर मुद्दा है, जो जनसंख्या वृद्धि, तीव्र शहरीकरण और जल प्रबंधन की अक्षमता के कारण उत्पन्न हो रहा है। डेढ़ अरब से अधिक लोग सीमित ताज़े जल संसाधनों पर निर्भर हैं, और कई क्षेत्रों में, विशेषकर शुष्क एवं गर्मी के मौसम के दौरान, गंभीर जल समस्या का सामना करना पड़ता है। भूजल का अत्यधिक दोहन, नदियों का प्रदूषण और अनियमित मानसून पैटर्न इस संकट को और बढ़ाते हैं।

यह संकट कृषि को प्रभावित करता है, जो मानसूनी वर्षा पर अत्यधिक निर्भर है, और ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति को खतरे में डालता है। इस बढ़ती चुनौती का समाधान करने के लिए जल संरक्षण को बढ़ावा देने, बुनियादी ढांचे में सुधार करने आम जनता को जागरूक बनाने और जल संसाधनों के निरंतर प्रबंधन करने के लिए उचित उपाय किए जाने की शीघ्र आवश्यकता है।

भारत के कई राज्यों में जल संकट की स्थिति काफी गहरी है और अगर शीघ्र उपाय नहीं किए गए तो स्थिति भयावह हो सकती है। जल संकट को बढ़ावा देने में अंधाधुंध औद्योगिकीकरण, औद्योगिक अपशिष्ट का ठीक से निस्तारण न होना, रासायनिक अवशेष, और कृषि रसायन (जैसे उर्वरक और कीटनाशक) जैसे प्रदूषक पीने योग्य जल में मिलकर नदियों, झीलों, झरनों और तालाबों को दूषित बना रहे हैं। खेती के जमीन पर बिल्डिंग, फ्लैट आदि का निर्माण, नदियों, तालाबों एवं झीलों का लगातार समाप्त होना भविष्य के गहरे संकट को दर्शाता है। अतः आज भारत में जल प्रबंधन किए जाने की आवश्यकता इमरजेंसी के दौर में पहुँच चुकी है और सरकार तो तत्काल जरूरी कदम उठाने चाहिए।

हिन्दी के कुछ प्रचलित मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ		
क्रम	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	अर्थ
1	**अंधे के हाथ बटेर लगना**	अचानक कोई बड़ा लाभ मिलना
2	**अंगूठा दिखाना**	मना करना
3	**अंधों में काना राजा**	कम योग्य व्यक्ति भी अयोग्य लोगों में श्रेष्ठ माना जाता है
4	**आग बबूला होना**	बहुत क्रोधित होना
5	**अंगारों पर लोटना**	अत्यधिक कष्ट सहना
6	**अक्ल के घोड़े दौड़ाना**	बहुत सोच-विचार करना
7	**अंधे के आगे रोना**	व्यर्थ प्रयास करना
8	**असमान के तारे तोड़ना**	असंभव कार्य करना
9	**अधजल गगरी छलकत जाए**	अल्प ज्ञान वाला व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करता है
10	**अपनी खिचड़ी अलग पकाना**	दूसरों से अलग रहना
11	**बिना सिर-पैर की बात**	बिना तर्क की बात
12	**बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद**	अयोग्य व्यक्ति योग्य वस्तु की कद्र नहीं कर सकता
13	**बाल की खाल निकालना**	छोटी-छोटी बातों में उलझना
14	**बहती गंगा में हाथ धोना**	मौके का फायदा उठाना
15	**बात का बतंगड़ बनाना**	छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना
16	**बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना**	किस्मत से अचानक लाभ मिलना
17	**बुरा मानना**	नाराज होना
18	**भैंस के आगे बीन बजाना**	किसी अयोग्य व्यक्ति को समझाने का प्रयास करना।
19	**बगुला भगत**	धोखेबाज व्यक्ति
20	**बिना मतलब की बात**	फिजूल की बात
21	**दाल में कुछ काला होना**	कुछ गड़बड़ होना
22	**दो नावों में पैर रखना**	एक साथ दो विरोधी स्थितियों में रहना
23	**दूध का जला छाछ भी फूंक कर पीता है**	एक बार ठगा गया व्यक्ति हमेशा सावधान रहता है
24	**दाँतों तले उंगली दबाना**	अत्यधिक आश्चर्य होना
25	**दिल पर पत्थर रखना**	अपने भावनाओं को नियंत्रित करना
26	**दूसरों की आंख का तिनका देखना और अपनी आंख का शहतीर न देखना**	दूसरों की छोटी गलतियों को देखना और अपनी बड़ी गलतियों को नजरअंदाज करना
27	**दाल गलना**	काम बन जाना
28	**दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ना**	तेजी से प्रगति करना
29	**दोनों हाथों से लूटना**	अत्यधिक लाभ उठाना
30	**दूध का दूध और पानी का पानी करना**	न्याय करना

हिन्दी में प्रयोग होने वाले कुछ प्रचलित विदेशी शब्द			
अँग्रेजी भाषा के शब्द			
डॉक्टर,	हॉस्पिटल	टिकट	स्टेशन
पुलिस	टिकट	पेन	सिल
रेडियो	टेलीविज़न	कॉलेज	स्कूल
फ़िल्म	मशीन	साइकिल	टेलीफोन
नोटिस	फ़ाइल	ट्रेन	रेल
अरबी भाषा के शब्द			
अदालत	कानून	मुकद्दमा	फैसला
तारीख	इनाम	मदद,	इलाज
औरत	अमीर	फ़कीर	मतलब
किताब	मौसम	गवाह	
फ़ारसी भाषा के शब्द			
आराम	चश्मा	दुकान	मुफ्त
दीवार	नमक	बाग	आसमान
खत	दर्जी	मजदूर	बारिश
खून	तारीख	सरदार	
तुर्की भाषा के शब्द			
कैंची	चाकू	तोप	लाश
बेगम	बहादुर	कुली	चम्मच
कालीन,	सुराग		
पुर्तगाली भाषा के शब्द			
कमरा एवं मेज	चाबी	आलमारी	तौलिया
साबुन	फीता	पादरी	नीलाम
फ्रेंच भाषा के शब्द			
कारतूस एवं बिगुल	कूपन	इंजीनियर	रेस्टोरेंट
डच भाषा के शब्द			
तुरूप			
जापानी भाषा के शब्द			
रिक्शा	इमोजी	कराओके	सुडोकू
जूडो एवं कराटे	जित्सु	सुनामी	सायोनारा
ओरिगामी			

ग़ज़ल

**जिधर जाते हैं सब जाना उधर अच्छा नहीं लगता
मुझे पामाल रस्तों का सफ़र अच्छा नहीं लगता**

जावेद अख़्तर

जिधर जाते है सब जाना उधर अच्छा नहीं लगता
मुझे पामाल रस्तों का सफ़र अच्छा नहीं लगता

ग़लत बातों को ख़ामोशी से सुनना हामी भर लेना
बहुत हैं फ़ाएदे इस में मगर अच्छा नहीं लगता

मुझे दुश्मन से भी ख़ुद्दारी की उम्मीद रहती है
किसी का भी हो सर क़दमों में सर अच्छा नहीं लगता

बुलंदी पर उन्हें मिट्टी की ख़ुश्बू तक नहीं आती
ये वो शाख़ें हैं जिन को अब शजर अच्छा नहीं लगता

ये क्यूँ बाक़ी रहे आतिश-ज़नो ये भी जला डालो
कि सब बे-घर हों और मेरा हो घर अच्छा नहीं लगता

अर्थ

पामाल – पैरों से मसला हुआ या रौंदा हुआ
शजर – पेड़, पौधा या वृक्ष
आतिश-ज़नों – आग भड़काने वाले

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

सदस्य कार्यालयों के वर्तमान कार्यालयाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारी/नामित राजभाषा अधिकारियों की सूची

क्रम	सदस्य कार्यालय का नाम	कार्यालय अध्यक्ष का नाम एवं पदनाम	राजभाषा अधिकारी नाम एवं पदनाम
1	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज	श्री वेंकटेश्वर एल. कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य एवं अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)	श्री ओम प्रकाश खरवार , सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य-सचिव, नराकास
2	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, प्रयागराज एयरपोर्ट, प्रयागराज	श्री राजेश चावला विमानपत्तन निदेशक	श्री श्याम कार्तिक सिंह वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)
3	भारत पैट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड	श्री तुषार पायमोडे, प्रादेशिक प्रबंधक	श्री सौरभ परिहार, कार्यपालक
4	स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	श्री रूपक अग्रवाल सहायक महाप्रबंधक (विक्रय)	श्री प्रमोद मानिकपुरी, वरिष्ठ प्रबन्धक
5	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड, बरौनी-कानपुर पाइपलाइन	श्री शेष नारायण महाप्रबंधक	श्री शैलेश कुमार सिंह वरिष्ठ प्रचालन एवं अनुरक्षण अभियंता
6	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड, बाटलिंग प्लांट	श्री सुधीर गुप्ता मुख्य संयंत्र प्रबंधक (संयंत्र)	श्री राजेंद्र प्रसाद प्रबंधक (संयंत्र)
7	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड (मण्डल कार्यालय)	श्री जय कुमार ढाका, खुदरा बिक्री प्रमुख	श्री सुबोध केशरवानी
8	नैनी एरोस्पेस लिमिटेड	श्री संजय कुमार धूपड़ मुख्य कार्यपालक अधिकारी	श्री संजीव कुमार सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.)
9	आईटीआई लिमिटेड	श्री ए. एन. सिंह, प्लांट प्रमुख	श्रीमती पूनम सिन्हा, राजभाषा अधिकारी
10	पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	श्री पीयूष कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक	श्री अखण्ड प्रताप सिंह, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
11	राष्ट्रीय लघु उद्योग लिमिटेड	श्री तुफ़ैल अहमद,वरिष्ठ शाखा प्रबंधक	श्री मिन्हाज अलीम, विकास अधिकारी
12	भारतीय खाद्य निगम	श्री बजरंग लाल अग्रवाल मण्डल प्रबंधक	श्री ज्ञान प्रकाश, प्रबंधक (हिन्दी)
13	भारतीय जीवन बीमा निगम लि .मंडलीय कार्यालय	श्री अनिल कुमार वरिष्ठ मण्डल प्रबंधक	श्री देव मणि यादव प्रशासनिक अधिकारी
14	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड	श्री शोभित सोनकर सहायक प्रबंधक	श्री शोभित सोनकर सहायक प्रबंधक
15	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड मंडलीय कार्यालय –II	डॉ. नीरज कुमार ठाकुर वरिष्ठ व्यवसाय प्रबंधक	श्री दिब्यांश साहू, सहायक
16	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड मंडलीय कार्यालय –I	———	———
17	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड	श्री जितेंद्र कुमार, व्यवसाय प्रबंधक	श्री जितेंद्र कुमार, व्यवसाय प्रबंधक
18	डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर ऑफ इंडिया लिमिटेड	श्री आनंद भूषण सरन मुख्य महाप्रबंधक	श्री अभिषेक यादव परियोजना प्रबंधक/मानव संसाधन
19	रेलटेल कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रयागराज	श्री प्रशांत मिश्र क्षेत्रीय प्रबंधक	श्री सुशील कुमार निजी सचिव
20	भारत संचार निगम लिमिटेड	श्री बृजेन्द्र कुमार सिंह, महाप्रबंधक	---
21	एनएमडीसी लिमिटेड सिलिका सैंड प्रोजेक्ट	श्री हेमंत कुमार, सहायक महाप्रबंधक	श्री हेमंत कुमार, सहायक महाप्रबंधक
22	यूनाइटेड इंडिया इन्शुरेंस कंपनी लिमिटेड	श्री राजीव गोयल, प्रबंधक	श्री राजीव गोयल, प्रबंधक

तराना - ए - हिन्दी

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं इस की ये गुलसिताँ हमारा

गुर्बत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा

पर्बत वो सब से ऊँचा हम-साया आसमाँ का
वो संतरी हमारा वो पासबाँ हमारा

गोदी में खेलती हैं इस की हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिन के दम से रश्क-ए-जिनाँ हमारा

ऐ आब-रूद-ए-गंगा वो दिन है याद तुझ को
उतरा तिरे किनारे जब कारवाँ हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा

यूनान ओ मिस्र ओ रूमा सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाक़ी नाम-ओ-निशाँ हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रेहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा

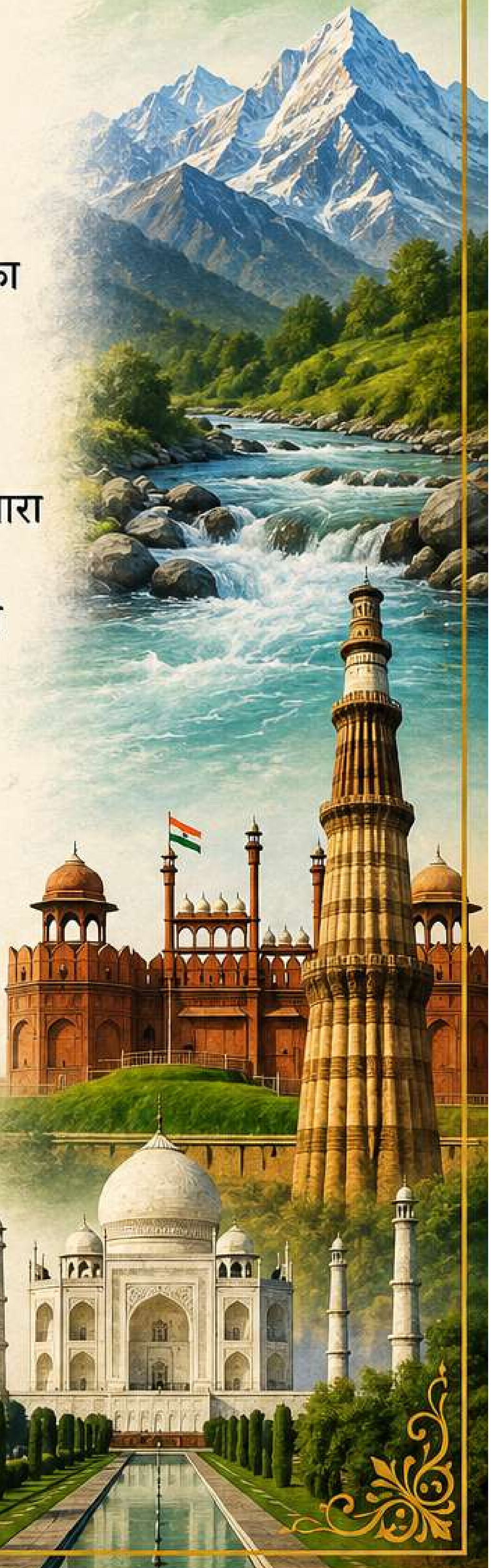

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

अल्लामा इक़बाल